समकालीन साहित्य, संस्कृति,
कला और विचार का मासिक

उत्तर प्रदेश

सितम्बर–2025, वर्ष 50

₹ 15/-

बादल ! तुम लौट आना

–अनुभूति गुप्ता

मीरा की पुकार में
वर्षा की बौछार में
अप्रतिम भक्ति स्वर में
आराधना के कण–कण में
बादल ! तुम लौट आना

कृष्ण की मधुर बांसुरी में
जहर के प्याले के क्षण–क्षण में
भक्ति गीत, तुम अविरल गाना
बादल ! तुम लौट आना

मीरा के कुंचित केश में
माथे पर उगते तेज में
नदी को चीरकर चट्टान बनाना
बादल ! तुम लौट आना

कृष्ण के मृग नयन में
साधना के काव्य चयन में
मीरा से भक्ति दोहराना
बादल ! तुम लौट आना

कृष्ण के भक्ति रस, मीरा की पुकार लाना
सुनो, मैं ऋणी रहूंगी तुम्हारी
बादल ! तुम लौट आना....

◆

पता : एच ब्लॉक–605, कुर्सी रोड, लखनऊ–226022
मो. : 9695083565

अनुक्रम

लेख

- अनुवाद व समाज का संबंध ❑ रेनू सैनी / 3
- इंटरनेट और तकनीकी युग में हिंदी का बढ़ता प्रभाव ❑ विभा कनन / 8

साक्षात्कार वार्ता

- मृत्यु का समय कोई बदल नहीं सकता : डॉ. शंभुनाथ ❑ सुधा शुक्ला / 10

कहानियाँ

- पड़ाव ❑ डॉ. अनीता चौहान / 13
- राख के कण ❑ अंजू त्रिपाठी / 16
- एक भगवान...ऐसे भी ❑ भावना झा / 22
- बेटी ❑ अनुजीत इकबाल / 26

कविताएँ

- बादल ! तुम लौट आना ❑ अनुभूति गुप्ता / आवरण–2
- भूख सिर्फ पेट की बात नहीं है.... ❑ डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक' / आवरण–3
- प्रेम का अनुवाद ❑ धर्मपाल महेंद्र जैन / 27
- एक नया आकाश ❑ पूनम पांडेय / 29
- ''विहंग की उड़ान'' ❑ आत्रेय मिश्र / 30

पुस्तक समीक्षा

- मन की मन से : जीवन उमंग की कविताएं / 31

उत्तर प्रदेश

❑ वर्ष 50 ❑ अंक 79
❑ सितम्बर–2025

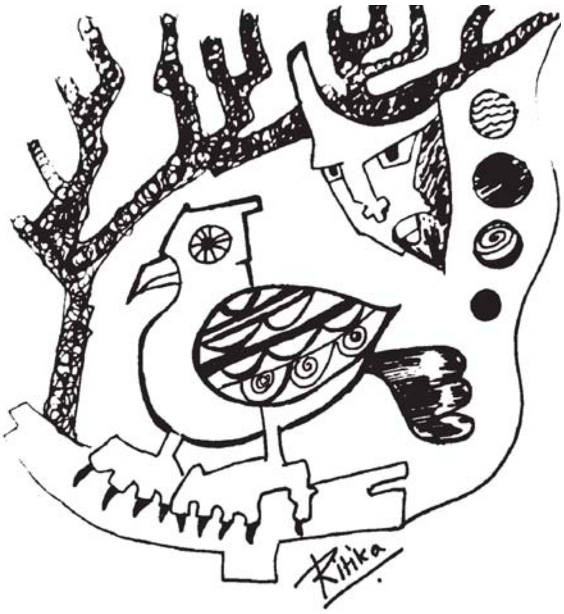

संरक्षक एवं मार्गदर्शक : ❑ **संजय प्रसाद**
प्रमुख सचिव, सूचना

प्रकाशक एवं स्वत्वाधिकारी : ❑ **विशाल सिंह**
सूचना निदेशक, उत्तर प्रदेश

❑ **चन्द्र विजय वर्मा**
सहा. निदेशक, सूचना / सम्पादक

सहयोग : ❑ **अजय कुमार द्विवेदी / जयेन्द्र सिंह**
सहयुक्त सम्पादक

उप सम्पादक : सूचना ❑ **दिनेश कुमार गुप्ता**

भीतरी रेखांकन : **आस्था / रीतिका / सिद्धेश्वर**

सम्पादकीय संपर्क : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, पं. दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
मो. : 9412674759, 7705800978
ईमेल : upmasik@gmail.com

दूरभाष : कार्यालय : ई.पी.ए.बी.एक्स 0522–2239132–33, 2236198, 2239011

पत्रिका information.up.nic.in वेबसाइट पर उपलब्ध है।

❑ **एक प्रति का मूल्य** : पंद्रह रुपये
❑ **वार्षिक सदस्यता** : एक सौ अस्सी रुपये
❑ **द्विवार्षिक सदस्यता** : तीन सौ साठ रूपये
❑ **त्रैवार्षिक सदस्यता** : पांच सौ चालीस रुपये

प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार लेखकों के अपने हैं। इनसे मासिक पत्रिका 'उत्तर प्रदेश' और सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।
–सम्पादक

आवर्तन

प्रत्येक राष्ट्र के सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक विकास के लिए एक स्वतंत्र भाषा का होना बेहद जरूरी है। भाषा के अभाव में किसी भी राष्ट्र की प्रगति असंभव है। भारतेंदु हरिश्चन्द्र ने लिखा भी है कि

''निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल।
बिन निज भाषा ज्ञान के, मिटत न हिय को सूल।''

अर्थात अपनी भाषा का ज्ञान ही वास्तविक उन्नति का आधार है। यदि व्यक्ति को अपनी भाषा का ही ज्ञान नहीं है तो उसके मन का दुख और हीनता का कोई अंत नहीं है। भाषा ही व्यक्ति को आत्मगौरव से परिपूर्ण करती है और उसके अंदर आत्मविश्वास का संचार करती है। हमारा देश बहुभाषीय है। यहां की संस्कृति की मिसाल पूरी दुनिया में दी जाती है। यहां पर अनेक भाषाएं और बोलियां बोली जाती हैं। सभी का विशेष महत्व है मगर हिंदी एक ऐसी भाषा है, जो देश के साथ ही विदेश में भी प्रभुत्व जमा चुकी है। आज हिंदी केवल भारत में ही नहीं, अपितु विश्व के कई देशों में भी चमक बिखेर रही है। हिंदी को सम्मान प्रदान करने के लिए 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

15 अगस्त, सन् 1947 का दिन संपूर्ण भारतीयों के लिए अंधकार को चीर कर प्रकाश में आने का रहा। इस दिन देश ने पूर्ण स्वतंत्रता प्राप्त की। इससे पहले परतंत्र भारतीय अंग्रेजों के नियम कानून मानने को बाध्य थे। उनका अपनी भाषा, रोजगार, शिक्षा आदि पर कोई अधिकार नहीं था। सब कुछ अंग्रेजों के अनुरुप और अंग्रेजी भाषा में ही किया जाता था। स्वतंत्रता के पश्चात् देश के अनेक राज्यों व क्षेत्रों ने अपने क्षेत्र व राज्य की राजभाषा के रूप में हिंदी एवं अन्य भारतीय भाषा को अपनाया। 14 सितंबर, 1949 को संविधान सभा ने हिंदी को भारत की राजभाषा के रूप में स्वीकार किया गया था। इसलिए 14 सितंबर को हिंदी दिवस मनाया जाता है।

प्रत्येक देश की प्रगति और समृद्धि के लिए उसका स्वतंत्र कानून, राष्ट्रभाषा और राजभाषा का होना आवश्यक है। इसलिए देश में संविधान बनाने के लिए सभा का गठन किया गया। इसमें देश के महत्वपूर्ण प्रतिनिधियों ने भाग लिया। 26 जनवरी, सन् 1950 को भारत का संविधान लागू हुआ। हिंदी भाषा के विस्तार को देखते हुए ही संविधान के अनुच्छेद 343(1) के तहत देवनागरी लिपि में लिखित हिंदी को संघ की राजभाषा घोषित की गई।

हिंदी पूरे देश की भाषा है। अब इसे विश्व के 50 से भी अधिक देशों जिनमें (रूस, अमेरिका, जापान, चीन, चेकोस्लोवाकिया, मारीशस, फिजीनाम, सूरी आदि) में भली–भांति समझा एवं बोला जाता है। आज हिंदी विश्व की तीसरी सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है। पहले नंबर पर अंग्रेजी, दूसरे पर मंदारिन और तीसरे पर हिंदी है। भारत में हिंदी को जनभाषा इसलिए कहा जाता है क्योंकि यह जन–जन को जोड़ती है। यह एकता की भाषा है जो हर प्रांत, संस्कृति और परंपरा को जोड़ने का कार्य करती है। प्रत्येक देश की सभ्यता, संस्कृति और परंपरा विविध है। यदि उनको करीब से जानना है तो अनुवाद ही एकमात्र ऐसा श्रेष्ठ उपाय है, जिससे कि उन्हें समझा एवं जाना जा सके। हर व्यक्ति 100 भाषाओं में पारंगत नहीं हो सकता। हर व्यक्ति का जुड़ाव अपनी मूल भाषा से अधिक होता है। ऐसे में अन्य भाषा का मूल भाषा में अनुवाद प्रत्येक पाठक को अन्य देश के साहित्य एवं संस्कृति से जोड़ता है।

हिंदी दिवस पर देश के अनेक स्थानों पर विभिन्न कार्यक्रम किए जाते हैं। सरकार भी हिंदी को बढ़ावा दे रही है। सरकारी कार्यालयों में हिन्दी के कामकाज को बढ़ावा देने के लिए प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी विशेष जोर दे रहे हैं।

हिंदी दिवस के अवसर पर स्कूल, कॉलेज एवं सरकारी कार्यालयों में हिंदी को बढ़ावा देने वाले अनेक कार्यक्रमों एवं प्रतियोगिताओं का आयोजन किया जाता है। इससे लोगों में हिंदी में मूलरूप से काम करने की भावना उत्पन्न होती है। हिंदी दिवस पर हिंदी के प्रचार–प्रसार के साथ ही मूल भाषा में अनुवाद के महत्व को भी बल देना चाहिए।

राजभाषा हिंदी राष्ट्र के गौरव की प्रतीक है। राजभाषा हिंदी भारतीयों के विकास का पर्याय है, इसलिए हम सबको हिंदी के प्रति गर्व से भर जाना चाहिए। हिंदी हमारा गौरव है । इसे हिंदी दिवस के दिन ही नहीं, हर दिन खास बनाना चाहिए क्योंकिः–

हिन्दी आशीर्वाद है, ये सिर्फ एक भाषा नहीं, दुनिया भर की दौलत है, इसमें छिपी भारत की विरासत है।

● दिनेश कुमार गुप्ता

अनुवाद व समाज का संबंध

❑ रेनू सैनी

अनुवाद केवल शब्दों को ही नहीं बदलता है, बल्कि वह उस भाषा की सभ्यता–संस्कृति और प्रकृति में बसी खुशबू को भी शब्दों के माध्यम से उस व्यक्ति तक पहुंचाता है जो मूल भाषा की संस्कृति और परिवेश से अनभिज्ञ है। समाज व्यक्तियों का समूह है। प्रत्येक व्यक्ति के विचार, कार्य–शैली, संवाद का तरीका विविध और भिन्न होते हैं। उन सभी की विचारधारा का समावेश समाज के अंदर होता है।

अनुवाद

अनुवाद अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' शब्द का पर्याय है। ऐसा कहा जाता है कि अंग्रेजी के 'ट्रांसलेशन' शब्द की उत्पत्ति लैटिन भाषा के 'Trans' और 'lation' शब्द से हुई। लैटिन भाषा में 'Trans' का अर्थ 'पार' होता है और 'lation' का अभिप्राय होता है 'पार ले जाने की क्रिया।' इस तरह अनुवाद के परिप्रेक्ष्य में 'ट्रांसलेशन' का अर्थ हुआ 'एक भाषा की सामग्री को किसी दूसरी भाषा में स्थापित करना।'

हिन्दी में अनुवाद शब्द संस्कृत भाषा से आया और इसका निष्पन्न 'वद' धातु में 'घन्न' प्रत्यय और 'अनु' उपसर्ग लगाने से हुआ है। इस शब्द का मूल अर्थ होता है–किसी वाक्य की व्याख्यात्मक आवृत्ति अथवा पूर्व कथित वाक्य का उल्लेख।

''अनुवाद मूल पाठ को स्रोत भाषा से इतर किसी अन्य (लक्ष्य) भाषा में रुपातंरित करने की वह प्रक्रिया है, जिसमें मूल पाठ के भाव सम्प्रेषण का पूरा ध्यान रखा जाता है।''

डॉ. सैमुअल जॉनसन के अनुसार, ''एक भाषा से दूसरी भाषा में भावार्थ का परिवर्तन ही अनुवाद है।''

समाज

समाज व्यक्तियों से मिलकर बनता है। 'समाज' से अभिप्राय सामाजिक संबंधों के उस जाल से है, जिसमें सामाजिक अंतरक्रिया, सामाजिक संस्था व सामाजिक संबंधों को बराबर महत्व दिया जाता है। एक अकेला व्यक्ति समाज का निर्माण नहीं कर सकता, क्योंकि उसे अन्य व्यक्तियों की परस्पर सहभागिता पर निर्भर रहना पड़ता है। समाज के अंतर्गत मानव जीवन के लगभग सभी पक्षों का समावेश होता है। प्रत्येक देश का समाज वहां की भौगोलिक, आर्थिक एवं सामाजिक स्थिति के अनुरूप होता है। इसी के हिसाब से व्यक्ति वहां के परिवेश में ढलता है। भाषा का प्रयोग भी समाज के स्तर व नियमों के अनुसार ही किया जाता है। बोलियों का विकास भी परिवेश, परंपरा और भौगोलिक स्थितियों के अनुसार विकसित होता है।

अनुवाद व समाज का संबंध

वर्तमान समय में प्रचार–प्रसार के माध्यमों की अति व्यापकता, अनेक सुख–सुविधाओं की विस्तीर्णता, जनसंचार के क्षेत्र में अभूतपूर्व क्रांति, हर क्षेत्र में तीव्र गति से होते परिवर्तन के कारण अब बिना घूमे ही विश्व की हर जानकारी एक क्लिक पर घर बैठे उपलब्ध हो रही है, पर सोचिए यदि ये जानकारी हमें हमारी भाषा में प्राप्त न होकर किसी अन्य भाषा में प्राप्त हो–क्या तब भी जीवन इतना सुगम हो पाएगा, बिल्कुल नहीं। क्योंकि भाषा भावों को व्यक्त करने का जरिया है। कुछ हाव–भाव अवश्य संकेतों से मिल सकते हैं, लेकिन गूढ़ बातें तो हमें भाषा के माध्यम से ही प्राप्त होती है।

विश्व में पृथ्वी पर मानव का आगमन हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं। चार्ल्स डॉर्विन ने 'ओरिजन ऑफ स्पीशीज' नामक पुस्तक में मानव के विकास की प्रक्रिया पर विचार लिखे। उन्होंने अपना पूरा जीवन प्राणी जगत पर शोध करने में बिता दिया और अनेक महत्वपूर्ण बातें मनुष्य के सामने रखीं। ऐसा माना जाता है कि केवल वानर ही मनुष्य के पूर्वजों के समीप आते हैं। जैसे–जैसे मनुष्य और समय का काल चक्र आगे बढ़ता रहा, वैसे–वैसे मनुष्य के मन–मस्तिष्क और व्यक्तित्व का विकास भी होता रहा।

नियोलिथिक काल या नव पाषाण युग मानव प्रौद्योगिकी के विकास की एक अवधि थी। इस युग में जंगली और घरेलू फसलों का उपयोग और पालतू जानवरों का इस्तेमाल किया जाने लगा था। फिर ऐसे ही विकास की प्रक्रिया आगे बढ़ती रही। पहले मानव संकेतों में बातें करता था, फिर धीरे–धीरे लेखन प्रारंभ किया। अनेक युगों से यह बात स्पष्ट हो चुकी है कि शिक्षित न होते हुए भी मानव ने पत्थरों की सहायता से अपने विचारों को दीवारों पर उकेरा। मानव ने देश, काल और परिस्थिति के अनुसार संप्रेषण की भाषा सीखी। विज्ञान प्रगति करता रहा और मानवीयता विकास की ओर बढ़ती रही। कालखंडों से गुजरती पृथ्वी पर मानव बिंबों के चिह्न लक्षित होकर निरंतर गतिशीलता और प्रगति की ओर बढ़ते रहे। इस तरह पूरा विश्व लगभग 195 देशों में बंट गया। पूरे विश्व के सात महाद्वीप हैं। ये देश इन्हीं सात महाद्वीपों के अंदर समाए हैं।

मनुष्य एक ऐसा प्राणी है जो अपने स्वतंत्र अस्तित्व की तलाश में रहता है। भीड़ में कोई भी रहना पसंद नहीं करता। भीड़ तब बनती है, जब लोग डर के कारण अपनी आंख और मुख बंद कर मूक हो जाते हैं। जो लोग हर परिस्थिति का सामना करते हुए आगे बढ़ते चलते है तो उनके पीछे बाद में कारवां खड़ा हो जाता है और उनके निशान सदा सर्वदा के लिए अमर हो जाते हैं। युवाल नोआ हरारी की पुस्तक 'सेपियन्स' में पहले पृष्ठ पर एक चित्र बना है। उसके नीचे लिखा है कि, ''दक्षिण फ्रांस की शोवे–पों–द अख़ गुफा में लगभग 30,000 साल पहले बनी एक मनुष्य के हाथ की छाप। किसी ने कहने की कोशिश की थी कि 'मैं यहीं था।' इतिहास में मनुष्य का अस्तित्व बहुत पहले से था। ऐसा माना जाता है कि इनका पहला विकास लगभग 25 साल पहले पूर्वी अफ्रीका में वानरों के एक आरम्भिक जीनस ऑस्ट्रेलोपीथिकस से हुआ था। (इसका अर्थ 'दक्षिणी वानर' होता है।) वर्षों तक मानव की प्रजाति में सुधार होता रहा। मनुष्य एक बेहद बुद्धिमान प्राणी है। पूरे विश्व में जब मनुष्य का विकास होता गया तो फिर देश एवं समाज का निर्माण हुआ। देश और समाज परिवेश के अनुरुप एक सांचे में ढलते गए। प्रारंभ में हर देश में शिक्षा, रहन सहन का स्तर, भाषा वहां की भौगोलिक स्थितियों के अनुसार थी। शिक्षा का दायरा बढ़ा, संचार व्यवस्था बढ़ी, विज्ञान का प्रचार प्रसार हुआ तो अन्य देशों के दूसरे देशों से संबंध बनने प्रारंभ हुए।

लेकिन सोचिए पूरा पाषाण काल से नियोलिथिक काल से विकसित होता यह सफर क्या अनुवाद के बिना संभव था? कतई नहीं। उपरोक्त सभी बातें हम तक अनुवाद के द्वारा हमारी भाषा में आईं और हम ज्ञानी बन गए।

कोई भी व्यक्ति एक साथ सौ–दो सौ भाषाओं में पारंगत नहीं हो सकता। एक से लेकर चार–पांच या ज्यादा से ज्यादा 20 भाषाएं व्यक्ति अपने जीवनकाल में बोल एवं समझ सकता है। इस पर भी उन सबकी सभ्यता, संस्कृति से पूरी तरह परिचित होना असंभव सा ही है, लेकिन इन सब को सरल किया अनुवाद ने। आज अनुवाद और समाज एक दूसरे के पूरक बन गए हैं। आज अनुवाद पर समाज एवं दुनिया इतनी अधिक निर्भर हो चुकी है कि अब समाज में अनुवाद के बिना जीवन की कल्पना भी नहीं की जा सकती।

अनुवाद आज समाज के कोने–कोने में अपनी पैठ बना चुका है। अर्थव्यवस्था, व्यापार, शिक्षा, साहित्य, संस्कृति, मीडिया, रोजगार, विज्ञान, राजनीति, सिनेमा सहित हर क्षेत्र में अनुवाद ने अपनी गहरी पकड़ बना ली है। इसलिए आज हमारे देश के क्षेत्रीय पर्व बिहु, ओणम, गणेश चतुर्थी, छठ पूजा, दुर्गा पूजा आदि अब केवल क्षेत्र विशेष के न होकर संपूर्ण देशवासियों के हो गए हैं। इतना ही नहीं अब विदेशों में बसे भारतीय भी इन सभी पर्वों को धूमधाम से मनाते हैं। इन पर्वों की मान्यता, तौर तरीके आदि अनुवाद के द्वारा ही व्यक्तियों के हृदय में रचे–बसे हैं। निम्न क्षेत्रों में अनुवाद एक दूसरे के देशों को जोड़ता है और उन्हें अपने देश की सभ्यता व संस्कृति से परिचित कराता है।

विश्व में पृथ्वी पर मानव का आगमन हुए लाखों वर्ष हो चुके हैं। चार्ल्स डॉर्विन ने 'ओरिजन ऑफ स्पीशीज' नामक पुस्तक में मानव के विकास की प्रक्रिया पर विचार लिखे। उन्होंने अपना पूरा जीवन प्राणी जगत पर शोध करने में बिता दिया और अनेक महत्वपूर्ण बातें मनुष्य के सामने रखीं। ऐसा माना जाता है कि केवल वानर ही मनुष्य के पूर्वजों के समीप आ सकते हैं। जैसे–जैसे मुनष्य और समय का काल चक्र आगे बढ़ता रहा, वैसे–वैसे मनुष्य के मन–मस्तिष्क और व्यक्तित्व का विकास भी होता रहा।

साहित्य

साहित्य समाज की दशा एवं दिशा दिखाने का सबसे सहज स्वरूप है। आज भी साहित्य व्यक्ति, परिवार, समाज, देश व विदेश का न केवल मार्गदर्शन करता है अपितु उन्हें झकझोरता भी है। समय के अनुसार साहित्य भी पृष्ठों से निकलकर डिजिटल स्वरूप ले चुका है। यह समय की मांग है। परिवर्तन सृष्टि का अनिवार्य नियम है। साहित्य ने प्राचीनकाल से लेकर आज तक समाज में परिवर्तन की बयार उत्पन्न की है। देश की स्वतंत्रता में क्रांतिकारियों एवं लेखकों की रचनाओं का बहुत बड़ा हाथ था। इनमें प्रेमचंद, भारतेंदु हरिश्चन्द्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, मैथिलीशरण गुप्त, श्रीधर पाठक, माखनलाल चतुर्वेदी, सुभद्राकुमारी चौहान, सुमित्रानंदन पंत आदि का महत्वपूर्ण योगदान रहा। क्रांतिकारियों में भगत सिंह, मन्मथनाथ गुप्त, रामप्रसाद बिस्मिल, केसरी सिंह बारहठ, गणेश शंकर विद्यार्थी ने अपने क्रांतिकारी लेखन से अनेक भारतीयों की सोई हुई देश प्रेम की भावना को जगाया। आज इनकी अनूदित रचनाएं पूरी दुनिया में लोगों को राह दिखा रही हैं। साहित्य के माध्यम से ही आज देश एक दूसरे के विषय और सोचने के तरीकों से परिचित हो पाएं हैं। अनुवाद ने ही साहित्य को एक नई दिशा दी है। गीतांजलि श्री के उपन्यास 'रेत समाधि' के अनुवाद 'ट्रम्ब ऑफ सैंड' को पहली बार अंतरराष्ट्रीय बुकर पुरस्कार मिलने से न केवल अनुवाद की महत्ता सिद्ध हुई है, अपितु इससे हिन्दी भाषा को भी नई पहचान मिली है। अनुवाद में अनुवादक की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। 'रेत समाधि' की अनुवादक 'डेजी रॉकवेल' बेहद प्रसिद्ध अनुवादक हैं। उन्होंने हिन्दी अनुवाद को अंग्रेजी अनुवाद से पाश्चात्य समाज में इस तरह से रचा बसा दिया कि निर्णायक मुग्ध हुए बिना न रह सके।

इसी तरह वर्ष 2025 में 'हार्ट लैंप' नामक कहानी संग्रह मूल रूप से कन्नड़ में लिखी गयी है। इसका अंग्रेजी अनुवाद दीपा भस्थी द्वारा किया गया है। इसकी मूल लेखिका बी अनु मुश्ताक हैं। यह अंतर्राष्ट्रीय बुकर पुरस्कार जीतने वाला पहला कहानी संग्रह है।

अनुवाद के द्वारा ही विश्व साहित्य की अवधारणा को बल मिला। भारत का प्राचीन कथा साहित्य 'पंचतंत्र' अरबी एवं अन्य यूरोपीय भाषाओं में अनूदित होकर जन–जन तक पहुंचा। इसी तरह देश विदेश की लोककथाएं भी अनुवाद के द्वारा ही पाठक तक सरलता से पहुंची। आज प्रेमचंद, रवीन्द्रनाथ टैगोर, आर के नारायण, आंतोन चेखव, लियो टालस्टाय, पाउलो कोएल्हो, रॉन्डा बर्न आदि की रचनाएं पूरे विश्व में अनुवाद के द्वारा ही धूम मचा रही हैं। इससे स्पष्ट है कि अनुवाद के माध्यम से ही साहित्य एवं कला की विश्वचेतना का विकास हो रहा है।

संस्कृति

प्रत्येक देश की सभ्यता एवं संस्कृति भिन्न होती है। दूसरे देशों की सभ्यता एवं संस्कृति विश्व के किसी भी देश तक न पहुंच पाती, यदि अनुवाद न होता। दुनिया के जिन देशों में विभिन्न जातियों एवं संस्कृतियों का मिलन हुआ है वहां सामाजिक संस्कृति के निर्माण में अनुवाद की महत्वपूर्ण भूमिका रही है। इतना ही नहीं अनुवाद के माध्यम से ही देशों को यह ज्ञात हुआ कि कई देशों की संस्कृतियां उनकी संस्कृति से मिलती जुलती हैं।

अंग्रेज विद्वान एडवर्ड टायलर संस्कृति की एक पूर्व मानवविज्ञानीय परिभाषा देते हैः 'संस्कृति या सभ्यता अपने व्यापक नृजातीय अर्थ में एक जटिल समग्र है जिसमें ज्ञान, आस्था, कला, नैतिकता, कानून, प्रथा तथा मनुष्य के समाज के सदस्य के रूप में होने के फलस्वरूप प्राप्त अन्य क्षमताएँ तथा आदतें शामिल हैं' (टायलर 1871:1)।

अनुवाद सांस्कृतिक सेतु है। संशिलष्ट संस्कृति के निर्माण का मूल कारक अनुवाद है। विश्व मैत्री के लिए आज अनुवाद की भूमिका को नकारा नहीं जा सकता। यह भावनात्मक एकता और राष्ट्रीय सामाजिक संस्कृति के विकास का सोपान है।

सिनेमा

सिनेमा ने समाज और संस्कृति को जहाँ भी अनुदित करने की कोशिश की भाषा कभी भी बाधक नहीं बनी। देश–विदेश की भाषाओं में अनूदित सिनेमा ने विश्व पटल पर अलग पहचान बनाई है। अनुवाद के द्वारा ही देश विदेश को सिनेमा के लिए नए नए विषय प्राप्त हुए। विश्व के हॉलीवुड सिनेमा ने भारतीय दर्शकों के दिलों पर राज किया है तो भारतीय सिनेमा की कुछ फिल्मों के अनुवाद ने भी पूरे विश्व के दर्शकों को मोहित किया है।

टाइटेनिक, स्पाइडर मैन, अवतार, द अवेंजर्स ऐसी ही फिल्में हैं।

इसी तरह दक्षिण भारत की हिन्दी में डब पुष्पा, केजीएफ, आरआरआर, बाहुबली, रोबोट आदि ऐसी ही फिल्में हैं।

हिन्दी फिल्मों में 'दंगल', 'थ्री इडियट', 'पीके' आदि ने अनुवाद के माध्यम से देश–विदेश में अच्छी खासी कमाई की।

हिन्दी फिल्मों के अतिरिक्त दक्षिण भाग की फिल्में भी आज केवल देश में ही नहीं अपितु विदेशों में भी अपनी लोकप्रियता के झंडे गाड़ रही हैं। इनमें 'आरआरआर', 'बाहुबली', 'केजीएफ', 'पुष्पा' आदि प्रमुख हैं। इनमें 'आरआरआर' के गीत 'नाटू–नाटू' ने तो मूल गीत वर्ग में ऑस्कर अवॉर्ड भी अपने नाम कर लिया। इस फिल्म को ऑस्कर अवॉर्ड मिलने से न केवल भारत का नाम विश्व फलक पर चमका है, बल्कि अनुवाद की सार्थकता को भी बल मिला है। अब वह गुजरे ज़माने की बातें हो गई हैं जब किसी अच्छी रचना, गीत या फिल्म से दर्शक और पाठक केवल इसलिए दूर होते हैं क्योंकि भाषा की समस्या होती थी।

सिनेमा द्वारा सामाजिक यथार्थ के अनुवाद का प्रयास विश्व सिनेमा जगत के जिन दिग्गजों ने किया उनमें – ग्रिफिथ, आइजेंस्टाइन, चैप्लिन, ऑर्सन वैल्स, फेलीनो, बर्गमैन, कुरोसावा, तारकोवास्की, गोदार, सत्यजीत रे आदि प्रमुख हैं।

आज सिनेमा में नए नए विषय निकल कर आ रहे हैं। ऐसा सिर्फ अनुवाद के द्वारा ही संभव है।

अनेक कंपनियों ने आपस में साझेदारी करके भी ऑटोमेटेड कैप्शन के द्वारा वॉयस अनुवाद को संभव बना दिया है। इससे ब्रॉडकास्टर्स और अनेक संस्थाएं बहुभाषी लोगों तक सस्ते और सुगम तरह से पहुंच पाने में सफल हुई हैं।

ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकी

वर्तमान समय में अनुवाद ज्ञान–विज्ञान, प्रौद्योगिकी, तकनीक, इंजीनियरिंग आदि का संवाहक है। आज विश्व के अनेक देशों में विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा, खगोल आदि के क्षेत्रों में आशातीत विकास हो रहा है। आज अनेक देश सेटेलाइट के युग में भी प्रवेश कर चुके हैं। अब अंतरिक्ष विज्ञान संबंधी विकास आज की अनिवार्यता है। इस अनिवार्यता को अनुवाद के द्वारा ही पूर्ण किया जा सकता है। पूरे विश्व में लगभग 3500 भाषाएं बोली व समझी जाती हैं। हर देश की भाषा, रूपरेखा अलग है। ऐसे में अनुवाद के बिना अन्य देशों तक इनकी जानकारी पहुंचना असंभव है। अंग्रेजी आज भी कई लोगों की पहुंच से दूर है, इसलिए अनुवाद की अनिवार्यता आने वाले समय में बढ़ती ही रहेगी।

एआई यानि आर्टिफिशल इटेंलीजेंस ने अनुवाद के क्षेत्र में भी क्रांति ला दी है। आज एआई के माध्यम से अनेक अनुवाद सेवाएं जैसे GlobeScribe.ai लॉन्च की गई हैं। ये सेवाएं अत्यंत तेज और सस्ते विकल्प के रूप में लोगों के समक्ष हैं। इनके माध्यम से प्रत्येक व्यक्ति किसी भी विश्व की सभ्यता, संस्कृति आदि से परिचित हो सकता है।

इन क्षेत्रों में अनुवाद न केवल एक दूसरे को जोड़ता है अपितु एकता भी प्रवाहित करता है। इसके अलावा ग्लोबलाइजेशन के दौर में अनुवाद के क्षेत्र में असीमित रोजगार हैं। क्षेत्रीय व विदेशी भाषाओं में लिखा जाने वाला साहित्य हो, न्यूज चैनल हों, समाचार–पत्र पत्रिकाएं हों, इन क्षेत्रों में अनुवादकों को सहजता से रोजगार मिल सकता है। इनके अतिरिक्त देश व विदेशी एम्बेसी आदि में भी अनुवादकों की भारी मांग रहती है। ग्लैमर के क्षेत्र में भी आज अनुवादकों का दबदबा है। अनुवादक ग्लैमर के क्षेत्र में विज्ञापनों, मॉडलों आदि के माध्यम से अच्छा रोजगार पा सकते हैं।

आज अनुवाद कदम–कदम पर हमारे ज्ञान में वृद्धि करता है। आधुनिक गजट ने अनुवाद को सरल बनाकर हर व्यक्ति को इस योग्य बना दिया है कि वह अकेले ही जानकारी प्राप्त कर अपनी अनेक समस्याओं का समाधान प्राप्त कर सकता है।

अनुवाद एक ऐसा पुल है जिसे यदि अदृश्य कर दिया जाए तो आज विश्व मंझधार में डूबता हुआ नज़र आए।

अनुवाद का महत्व दिन प्रतिदिन बढ़ता ही रहेगा, मगर हां इसके साथ इस बात का भी ध्यान रखना जरूरी है कि अनुवाद में अर्थ सुगम होकर प्रकट हो। यदि अर्थ का अनर्थ हुआ तो फिर अनुवाद की वैचारिकता एवं उद्देश्य को विफल होते देर नहीं लगेगी।

गहन अभ्यास से हर कार्य में विजय संभव है। इसी तरह अनुवाद के क्षेत्र में उतरने से पहले स्वयं को अभ्यास का महारथी अवश्य बना लें, फिर किसी भी क्षेत्र को बेधना आपके लिए मुश्किल नहीं होगा। ◆

पता : 3, डी.डी.ए फ्लैट्स, खिड़की गांव, मालवीय नगर, नई दिल्ली–110017
मो. : 9971125858

सूचना निदेशालय के उपसंपादक दिनेश कुमार गुप्ता डॉ. तारा सिंह विशिष्ट राष्ट्रीय सम्मान 2025 से सम्मानित

लखनऊ, हिन्दी साहित्य सेवा के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान के लिए सूचना एवं जनसंपर्क विभाग, उत्तर प्रदेश के मुख्यालय में कार्यरत उपसंपादक (हिन्दी) दिनेश कुमार गुप्ता को ''डॉ. तारा सिंह विशिष्ट राष्ट्रीय सम्मान 2025'' से सम्मानित किया गया है। यह सम्मान स्वर्ग विभा परिवार, मुम्बई की ओर से प्रदान किया गया।

कार्यक्रम के अवसर पर संस्था के पदाधिकारियों ने कहा कि स्वर्ग विभा परिवार वर्षों से हिन्दी साहित्यकारों को राष्ट्रीय स्तर पर सम्मानित कर उनके योगदान को नई पहचान दे रहा है। इसी क्रम में इस वर्ष दिनेश कुमार गुप्ता का चयन उनके निरंतर लेखन, संपादन और हिन्दी साहित्य संवर्द्धन में सक्रिय भूमिका को देखते हुए किया गया है। 'उत्तर प्रदेश मासिक' परिवार श्री गुप्ता के उज्जवल भविष्य की कामना करता है।

इंटरनेट और तकनीकी युग में हिंदी का बढ़ता प्रभाव

❑ विभा कनन

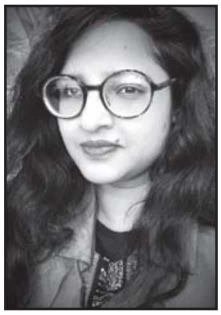

भाषा केवल संवाद का साधन नहीं होती, बल्कि वह संस्कृति, पहचान और भावनाओं की अभिव्यक्ति का भी माध्यम है। हिंदी, जो भारत की सबसे अधिक बोली जाने वाली भाषा है, आज तकनीकी युग में नई उड़ान भर रही है। इंटरनेट, मोबाइल, सोशल मीडिया और डिजिटल प्लेट्रफार्म्स ने हिंदी को उस मुकाम तक पहुँचाया है जहाँ वह न केवल भारत, बल्कि पूरी दुनिया में अपनी मजबूत उपस्थिति दर्ज करा रही है। यदि कभी यह कहा जाता था कि तकनीक केवल अंग्रेजी की भाषा है, तो आज यह धारणा बदल चुकी है। अब तकनीक हिंदी को अपने साथ लेकर चल रही है और हिंदी तकनीक को जन–जन तक पहुँचाने का माध्यम बन रही है।

डिजिटल दुनिया में हिंदी की नई पहचान :

इंटरनेट पर पहले अंग्रेजी का ही वर्चस्व था, लेकिन जैसे–जैसे भारत में इंटरनेट यूजर्स की संख्या बढ़ी, वैसे–वैसे हिंदी की माँग और उपस्थिति भी बढ़ती गई। रिपोर्ट्स के अनुसार, इंटरनेट पर हिंदी पढ़ने वालों की संख्या अंग्रेजी की तुलना में कई गुना तेजी से बढ़ रही है। (गूगल और केपीएमजी की एक रिपोर्ट कहती है कि आने वाले वर्षों में भारत में इंटरनेट पर हिंदी उपयोगकर्ता अंग्रेजी उपयोगकर्ताओं से दोगुने हो जाएंगे।)

आज लगभग हर बड़ी वेबसाइट, ऐप और पोर्टल हिंदी में उपलब्ध है। चाहे ऑनलाइन शॉपिंग हो, बैंकिंग हो या फिर हेल्थ सेवाएँ–हिंदी अब हर जगह उपयोग हो रही है।

सोशल मीडिया : हर दिल की भाषा हिंदी :

सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म्स ने हिंदी को सबसे बड़ा मंच दिया है। फेसबुक, ट्विटर (अब एक्स), इंस्टाग्राम और यूट्यूब पर हिंदी कंटेंट की लोकप्रियता अद्भुत है। यूट्यूब पर हिंदी चैनल्स करोड़ों सब्सक्राइबर्स पा रहे हैं। मीम्स, रील्स और शॉर्ट वीडियो में हिंदी सबसे ज्यादा इस्तेमाल की जाने वाली भाषा है। हिंदी कविताएँ, शायरी और विचार सोशल मीडिया पर वायरल होते हैं।

सोशल मीडिया ने यह साबित कर दिया कि हिंदी केवल संवाद की भाषा नहीं, बल्कि भावनाओं और रचनात्मकता की सबसे बड़ी अभिव्यक्ति है।

मोबाइल और ऐप्स ने आसान की हिंदी की राह :

स्मार्टफोन क्रांति ने हिंदी को आम आदमी तक पहुँचा दिया।

अब हिंदी कीबोर्ड्स आसानी से उपलब्ध हैं। गूगल वॉयस टाइपिंग से लोग केवल बोलकर हिंदी लिख सकते हैं।

व्हाट्सएप, टेलीग्राम और अन्य चैटिंग ऐप्स पर हिंदी में बातचीत करना आम हो चुका है। आज गाँव–गाँव के लोग मोबाइल से हिंदी में समाचार पढ़ रहे हैं, ऑनलाइन लेन–देन कर रहे हैं और शिक्षा प्राप्त कर रहे हैं। यह सब तकनीक की वजह से संभव हुआ है।

डिजिटल पत्रकारिता : हिंदी समाचारों का सुनहरा दौर

हिंदी पत्रकारिता का इतिहास बहुत पुराना है, लेकिन डिजिटल युग ने इसे नई ऊर्जा दी है। लगभग हर बड़ा अख़बार और न्यूज चैनल अब अपनी हिंदी वेबसाइट और मोबाइल ऐप चला रहा है। (वेब पोर्टल्स जैसे भास्कर, आजतक, नवभारत टाइम्स, दैनिक जागरण आदि करोड़ों पाठकों तक पहुँच रहे हैं।) ग्रामीण क्षेत्रों में लोग अब टीवी या रेडियो पर निर्भर नहीं हैं, बल्कि सीधे मोबाइल से हिंदी में ताजा खबरें पढ़ लेते हैं।

डिजिटल पत्रकारिता ने हिंदी को राष्ट्रीय ही नहीं, बल्कि वैश्विक स्तर पर भी पहचान दिलाई है।

ऑनलाइन शिक्षा में हिंदी की चमक

तकनीकी युग ने शिक्षा के क्षेत्र में क्रांति कर दी है और इसमें हिंदी की भूमिका बेहद अहम है। विभिन्न ऑनलाइन कोर्सेज अब हिंदी में उपलब्ध हैं। सरकारी और निजी प्लेटफॉर्म जैसे स्वयं, दीक्षा, बायजूस, अनअकैडमी आदि हिंदी माध्यम में पढ़ाई की सुविधा दे रहे हैं। ग्रामीण और छोटे कस्बों के छात्र, जो अंग्रेजी की वजह से पीछे रह जाते थे, अब हिंदी माध्यम से भी उच्च्व गुणवत्ता की शिक्षा पा रहे हैं।

इससे शिक्षा का लोकतंत्रीकरण हुआ है और हिंदी ने तकनीक की मदद से करोड़ों छात्रों तक ज्ञान की पहुँच सुनिश्चित की है।

मनोरंजन जगत : OTT पर छा रही है हिंदी

तकनीक ने मनोरंजन जगत को भी बदल दिया है। नेटफ्लिक्स, अमेजन प्राइम, डिज़्नी हॉटस्टार जैसे OTT प्लेटफॉर्म्स पर हिंदी कंटेंट की माँग सबसे अधिक है। हिंदी वेब सीरीज और फिल्में केवल भारत में ही नहीं, बल्कि विदेशों में भी देखी जा रही हैं। सबटाइटल्स और डबिंग ने हिंदी कंटेंट को वैश्विक दर्शकों तक पहुँचा दिया है। बॉलीवुड गीत और हिंदी संगीत यूट्यूब पर सबसे ज्यादा सुने जाते हैं।

यह स्पष्ट करता है कि तकनीक और मनोरंजन ने मिलकर हिंदी को विश्व पटल पर स्थापित कर दिया है।

हिंदी का प्रोत्साहित करती सरकारी नीतियां :

भारत सरकार और विभिन्न राज्य सरकारें हिंदी को तकनीकी मंचों पर प्रोत्साहित कर रही हैं। सरकारी वेबसाइट्स अब हिंदी में भी उपलब्ध हैं। UIDAI, IRCTC, आधार, रेलवे और बैंकिंग सेवाएँ हिंदी में संचालित की जा रही हैं।

सरकारी नीतियों ने तकनीक और हिंदी के बीच सेतु का काम किया है।

चुनौतियाँ : अंग्रेजी का दबदबा और तकनीकी सीमाएँ

यद्यपि हिंदी ने डिजिटल दुनिया में बड़ी उपलब्धियाँ हासिल की हैं, फिर भी कुछ चुनौतियाँ मौजूद हैं : तकनीकी शब्दावली अधिकतर अंग्रेजी आधारित है। कई ऐप्स और सॉफ्टवेयर अभी भी पूरी तरह हिंदी समर्थित नहीं हैं। हिंदी में कंटेंट की गुणवत्ता को लेकर कभी–कभी सवाल उठते हैं। ग्रामीण इलाकों में इंटरनेट कनेक्टिविटी की कमी से हिंदी डिजिटल विकास धीमा हो जाता है।

इन चुनौतियों का समाधान करना जरूरी है ताकि हिंदी वास्तव में तकनीक की मुख्य भाषा बन सके।

AI और हिंदी के तालमेल से होगा उज्जवल भविष्य

भविष्य में हिंदी का तकनीकी संसार और भी विस्तृत होगा।कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) और मशीन अनुवाद से हिंदी को वैश्विक स्तर पर पहुँचाया जा सकेगा। Chatbots और Virtual Assistants अब हिंदी में बातचीत करने लगे हैं। मेटावर्स, AR और VR जैसी तकनीकें भी धीरे–धीरे हिंदी में उपलब्ध होंगी। हिंदी ब्लॉगिंग, व्लॉगिंग और पॉडकास्टिंग आने वाले समय में और भी लोकप्रिय होंगे।

यह कहना गलत नहीं होगा कि आने वाले दशकों में हिंदी न केवल भारत की, बल्कि विश्व की डिजिटल भाषाओं में अग्रणी भूमिका निभाएगी।

तकनीक से समृद्ध होती हिंदी

तकनीक और इंटरनेट ने हिंदी को नई पहचान दी है। आज हिंदी गाँव–गाँव से लेकर महानगरों और भारत से लेकर विदेशों तक अपनी छाप छोड़ रही है। मोबाइल, सोशल मीडिया, डिजिटल शिक्षा, पत्रकारिता और मनोरंजन–हर क्षेत्र में हिंदी ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई है।

आज समय की माँग है कि हम तकनीक का उपयोग कर हिंदी को और अधिक सशक्त बनाएँ। यदि अंग्रेजी तकनीक की भाषा है, तो हिंदी तकनीक की आत्मा बन सकती है। तकनीक ने हिंदी को नई उड़ान दी है और आने वाले समय में हिंदी न केवल भारत की, बल्कि पूरी दुनिया की डिजिटल पहचान बनकर उभरेगी। ◆

पता : नं 26 कृष्ण राघवन नगर बोडिपलायम, मदुकरई, कोयम्बतूर, तमिलनाडु 641105

मो. : 08957637355

मृत्यु का समय कोई बदल नहीं सकता : डॉ. शंभुनाथ

❑ सुधा शुक्ला

आदरणीय स्व. डॉ. शंभुनाथ जी, पूर्व मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन एवं हिन्दी भाषा के प्रकाण्ड विद्वान को विनम्र श्रद्धांजलि।

डॉ. शंभुनाथ ने 30 अगस्त, 2025 को हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश के निराला सभागार में आयोजित समारोह में काल की कथा कहते–कहते चिर मौन धारण कर लिया। संसार स्तब्ध–सा उनके इस अद्‌भुत महाप्रयाण को देखता रह गया। जन–जन के मन में गहन शोक की लहर दौड़ गई, साथ ही इस बात का आश्चर्य भी हुआ कि इतने हाहाकारी समय में वह कितने सुव्यवस्थित तथा गरिमामय ढंग से महाप्रयाण कर गए।

डॉ. शंभुनाथ जी

'मृत्यु का दिन और समय निश्चित है, उसे कोई नहीं बदल सकता। जैसी हो भवितव्यता, वैसी मिलै सहाय, ताहि न जाए तहां पर, ताहि तहां ले जाए'–यह कहते हुए ही उन्होंने अपना सिर मेज पर टिका लिया। संयोग से उस दिन उनकी पत्नी श्रीमती चंदा भी उनके साथ सभागार में उपस्थित थीं।

02 मार्च, 1947 को जन्मे तथा वर्ष 1970 बैच के आई.ए.एस. डॉ. शंभुनाथ जी सच्चे कर्मयोगी थे, प्रशासनिक सेवा में होते हुए भी वह साहित्य सेवी थे। वर्ष–2007 में वे मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश शासन के पद से सेवानिवृत्त होने के पश्चात् उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान लखनऊ में कार्यकारी अध्यक्ष भी रहे। तदनन्तर वह स्वतंत्र चिन्तन एवं लेखन में व्यस्त रहे। वह कबीर, सूर तथा तुलसी साहित्य के मर्मज्ञ रहे।

वह विलक्षण प्रतिभा के धनी थे। मधुर वाणी, हंसता चेहरा, सरलता, सहजता और संस्कृति बोध उनका परिचय था। उनके प्रभावशाली व रोचक व्याख्यान सुनने के लिए इतने लोग आते कि हॉल में बैठने का स्थान कम पड़ जाता।

डॉ. शंभुनाथ राजस्व विभाग में मेरे प्रमुख सचिव रहे। उनकी कार्य प्रणाली भी उनकी तरह निराली और अद्‌भुत थी। वाणी में सरस्वती जी का वास था। परम ज्ञानी होकर भी वह ज्ञान को बोझिल नहीं होने देते थे। पूर्व राष्ट्रपति स्व. एपीजे अब्दुल कलाम की तरह उन पर भी अटूट श्रद्धा रही उन दोनों को ही जैसे ईश्वर प्रेमपूर्वक अपनी गोद में उठाकर ले गए।

वर्ष 2013 में डॉ. शंभुनाथ जी के आवास पर जाकर उनका साक्षात्कार लेने का मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ। वही साक्षात्कार पुनः उस महान विभूति की स्मृति में पुनर्प्रस्तुत है–

प्रश्न–1 आप मूलतः कहाँ के रहने वाले हैं? आपने अपनी शिक्षा–दीक्षा आदि कहाँ से प्राप्त की?

उत्तर– मैं मूलतः रांची, झारखण्ड का निवासी हूँ। ब्रिटिश शासन काल में मेरे पिताजी बिहार प्रान्त में मजिस्ट्रेट के पद पर कार्यरत रहे। स्वाधीनता प्राप्ति के पश्चात् वह बिहार प्रादेशिक सेवा के अधिकारी रहे। मेरे पिता की जहाँ–तहाँ बिहार प्रदेश में तैनाती रही, वहाँ के विद्यालयों में ही मैंने शिक्षा प्राप्त की है। पटना कालेज तथा पटना विश्वविद्यालय से मैंने उच्च्य शिक्षा प्राप्त की है।

प्रश्न–2 साहित्य क्षेत्र में कब एवं कैसे आए ? इस क्षेत्र में आने की प्रेरणा आपको कब और किससे प्राप्त हुई ?

उत्तर– मेरी माँ श्रीमती चन्द्रावती देवी कथाकार एवं कवयित्री रहीं हैं। साहित्य के संस्कार मुझे शैशवकाल से माँ के माध्यम से प्राप्त हुए। अपने विद्यालय से निकलने वाली पत्रिका में मेरी कविताएं बचपन में ही छपने लगी थी।

प्रश्न–3 आप किन–किन साहित्यिक विधाओं में लेखन करते हैं ?

उत्तर– मैं कविता, कहानी तथा समालोचना विधाओं में लेखन करता हूँ।

प्रश्न–4 आपकी दृष्टि में वर्तमान समय में श्रेष्ठ रचनाकार कौन हैं ?

उत्तर– दरअसल इस प्रश्न को मैं एक अलग कोण से देखता हूँ। जैसा कि प्रख्यात समालोचक श्री टी. एस. इलियट मानते थे कि महान कवि नहीं होते वरन् महान कविताएं होती हैं। मैं भी यही मानता हूँ कि श्रेष्ठ रचनाकार नहीं वरन् रचना होती है। मुझे कबीर ग्रन्थावली, रामचरित मानस, कामायनी, स्फुट पदों में मीरा और कबीर के चुने हुए पद पसंद हैं। रामधारी सिंह दिनकर की उर्वशी तथा कुरूक्षेत्र पसन्द हैं। आप महान कविता की उपस्थिति इनमें पाएंगें। मुझे अज्ञेय की असाध्य वीणा बहुत पसंद है।

प्रश्न–5 आपके लेखन का उद्देश्य क्या रहा है?

उत्तर– प्रायः मैं कविता या कहानी को सोच–समझकर किसी उद्देश्य के साथ नहीं लिख पाता। जब कभी कोई भाव प्रबल हो जाए, कहानी का प्लाट प्रबल हो जाए, लिखने की बेचैनी हो, तब ही लिखता हूँ।

समालोचना के क्षेत्र में रचना के बारे में मेरी जो अलग धरातल पर समझ है और जिसमें गतानुगतिका नहीं है। पुरानी चीजों का दोहराव–पिष्ट प्रेषण नहीं है। मैंने अंग्रेजी साहित्य से एम.ए. किया हुआ है। पाश्चात्य समालोचना के मानदण्डों को लेकर मैंने रामचरित मानस पर लिखा है, जिसे विद्वत्जनों ने बहुत सराहा है।

प्रश्न–6 कृतियां जो अब तक प्रकाशित हुई ?

उत्तर– राम कथा के नये आयाम, बच्चन की काव्य यात्रा, दिनकर का रचना संसार, उत्तर प्रदेश में स्वाधीनता संग्राम के प्रेरक प्रसंग (आलोचना व शोध) तथा आकाश मेरे आइने में (काव्य संग्रह) प्रकाशित। राम कथा और नये प्रतिमान एवं आचार्य श्री पुस्तकों का सम्पादन। भारतीय ज्ञान पीठ द्वारा प्रकाशित पुस्तक–धूपछांही दिनकर विशेष रूप से चर्चित है। आकाशवाणी एवं दूरदर्शन से साहित्यिक विषयों पर विविध प्रसारण भी हुए हैं। इसके अतिरिक्त विभिन्न पत्र पत्रिकाओं में लेख–इत्यादि समय समय पर प्रकाशित होते रहे हैं।

प्रश्न–7 साहित्य क्षेत्र में योगदान हेतु आपको कौन–कौन से सम्मान अब तक प्राप्त हुए ?

उत्तर– कई महत्वपूर्ण सम्मान मिले, जिनमें से एक कर्मचारी साहित्य संस्थान के सौजन्य से 'महावीर प्रसाद द्विवेदी सम्मान' भी है। सम्मान पाने से अधिक अच्छा तब लगा जब हिन्दी साहित्य संस्थान में दो वर्ष तक कार्यकारी अध्यक्ष रहते हुए सम्मान देने का अवसर मिला।

प्रश्न–8 साहित्य को लेकर भविष्य में आपकी क्या योजनाएं हैं ?

उत्तर– हिन्दी साहित्य और हिन्दी भाषा के प्रति मैं शैशव काल से समर्पित रहा हूँ। वर्तमान समय में मुझे लगता है कि हिन्दी साहित्य में ठहराव की स्थिति है। ऐसा प्रतीत होता है कि कोई नया आंदोलन, नया अभियान आने को है एवं नवसृजन के माध्यम से हमें कोई महान रचना मिलने वाली है। मैं नवसृजन के प्रति आशान्वित हूँ एवं नवोदित

प्रतिभाओं को निरन्तर प्रोत्साहित करता हूँ। हिन्दी भाषा में जिस प्रकार से अंग्रेजियत की घुसपैठ हो रही है—उसके प्रति मैं चिन्तित भी हूँ। हिन्दी विश्व भाषा है, अतः इसे निरन्तर संवारा जाना चाहिए। ज्ञान—विज्ञान के क्षेत्र में हिन्दी भाषा में अभी पर्याप्त कार्य होना शेष है। हम सबको इस कार्य से जुड़ना चाहिए। मैं स्वयं इस दिशा में सचेष्ट हूँ तथा हिन्दी साहित्य एवं हिन्दी भाषा के विराट भविष्य के प्रति आस्थावान हूँ।

प्रश्न—9 वर्तमान साहित्य और साहित्यकारों में कोई ऐसी बात है, जो आपको कचोटती हो ?

उत्तर— मुझे ऐसा लगता है कि साहित्य को जिस प्रकार की साधना मानते हुए पूर्व में हिन्दी के श्रेष्ठ साहित्यकार जो रचना कर गए हैं, उस निष्ठा एवं तपश्चर्या का आज कहीं अभाव मिलता हैं। बहुत शीघ्रता के साथ प्रायः अतुकान्त रचनाएं लिखकर तुरन्त छपवाकर नये कवि बनने की जो होड़ लगी है—वह बहुत खटकती है। श्रेष्ठता का मानदण्ड दृष्टि ओझल नहीं होना चाहिए।

मुझे स्मरण आता है कि निराला जी के पास कोई युवा कवि अपनी कविता सुनाने का प्रस्ताव रखता था तो वह कहते थे कि पहले पचास पुराने कवियों की कविता मुझे सुनाओ। उनका तात्पर्य होता था कि नया कवि कुछ भी लिखने से पहले पुराने कवियों को भली—भाँति पढ़ ले, उनकी रचना को हृदयगंम कर लें, ताकि उसमें यह समझ विकसित हो सके कि हिन्दी कविता अतीत में किन—किन मोड़ों से, किन—किन श्रेष्ठताओं का स्पर्श करते हुए गुजरी है, ताकि जो कुछ नया लिखा जाए वह अद्यतन कविता का अत्यन्त निखरा हुआ रूप हो।

प्रश्न—10 क्षेत्रीय बोलियों से क्या हिन्दी भाषा के राष्ट्रभाषा बनने की राह में कोई बाधाएं हैं ?

उत्तर— ऐसा मैं मानता नहीं हूँ कि क्षेत्रीय बोलियों से हिन्दी भाषा की राह में कोई बाधाएं हैं। जैसे आप भक्ति काल को ही लीजिए कबीर की बोली पूर्वी मानी गई है, तुलसी अवधी के माने गए, मीरा राजस्थानी भाषा के साथ आई है, सूर में ब्रजभाषा है, पर क्या यह सच नहीं कि कबीर, तुलसी, मीरा, सूर हिन्दी के श्रेष्ठतम कवि हैं एवं यदि उनको क्षेत्रीयता के नाम पर हिन्दी से हटा दिया जाए तो हिन्दी साहित्य कितना निष्प्रभ एवं सूना हो जाएगा। हिन्दी की अपार शब्द—सम्पदा एवं विलक्षण अभिव्यक्ति कौशल क्षेत्रीय बोलियां देती हैं। देशज शब्द भी सब बोलियां से ही तो आए। क्षेत्रीय बोलियों से अभिव्यक्ति कौशल भी मिलता है।

प्रश्न—11 ख्यातिलब्ध साहित्यकार पं. गंगारत्न पाण्डेय जी (सम्प्रति गोलोकवासी) की रचनाधर्मिता पर आपकी क्या राय है?

उत्तर— पं. गंगारत्न पाण्डेय जी हमारे समय की विलक्षण प्रतिभा हैं। कुछ ऐसे वरिष्ठ एवं श्रेष्ठ साहित्यकार जो हमारे बीच आज हैं, जिनसे आशीष प्राप्त करके कोई भी व्यक्ति धन्यता का अनुभव करता है, उनमें श्री गंगारत्न पाण्डेय जी अग्रगण्य हैं। उन्होंने अनेक विधाओं में रचना की है। मैं उनकी कहानियों को पढ़कर बहुत अभिभूत हुआ। उनकी जीवनी पढ़ने का मुझे सुअवसर मिला। जितनी ईमानदारी एवं सच्चाई के साथ उन्होंने अपना जीवन प्रस्तुत किया है, वह स्तुत्य एवं सराहनीय है। लम्बे समय तक अमेरिका में रहने के बाद भी हिन्दी के प्रति उनमें जो अनुराग है, वह अत्यन्त प्रशंसनीय है। उन्होंने हिन्दी का प्रचार—प्रसार विदेशों में भी किया एवं विश्व भाषा के रूप में प्रतिष्ठित करने के संदर्भ में विपुल योगदान दिया है।

(जैसा कि दिनाँक 06.07.2013 को डॉ. शम्भुनाथ जी के द्वारा अपने आवास पर कहा गया।)

साक्षात्कार सम्पन्न होने के पश्चात् डॉ. शम्भुनाथ जी ने स्वरचित पुस्तक 'बच्चन की काव्य यात्रा' मुझे भेंट में दी और अपनी बनाई सुन्दर—सुन्दर मोहक पेंटिंग्स भी दिखाईं। चलते समय उन्होंने अपना हरा—भरा, रंग—बिरंगे फूलों से सजा बेहतर एवं प्यारा—सा लॉन और बगीचा भी दिखाया, जहां तितलियां उड़ रही थीं, चिड़ियां चहक रही थीं।

अपने अति व्यस्त समय से डॉ. शम्भुनाथ जी ने इस साक्षात्कार हेतु समय निकाला— इसके लिए मैंने हृदय तल से आभार प्रकट करते हुए उनसे विदा ली। ◆

पता : 3/417, विशालखण्ड—3, गोमतीनगर, लखनऊ—10

मो. : 9454414006

पड़ाव

❑ डॉ. अनीता चौहान

मम्मी जी ! दीपा की तीखी आवाज शालिनी जी के कानों में तेजाब सा घोल रही थी। ''यह क्या? आपसे इतना भी नहीं बनता कि अंदर आते समय अपनी चप्पलें बाहर उतार कर आयें, देख रही हैं फर्श पर कितने गंदे कीचड़ के निशान पड़ गये हैं पर आपको क्या? कभी इतना मंहगा टाइल्स नहीं देखे हैं ना, तभी तो। ज्यादा कुछ बोलूंगी तो आपको फट से बुरा लग जायेगा।'' दीपा तेज आवाज में कहे जा रही थी, उन्होंने पलट कर देखा तो कीचड़ तो नहीं, हाँ उनकी चप्पलों के हल्के निशान फर्श पर उभरे हुए थे। अपनी आंखों में उभर आई नमी को वहीं थामकर वे अपने कमरे में आ गईं। मगर अब ऑखों ने उन आंसुओं का संभालने से इंकार कर दिया और वे उनसे बाहर छलक कर शालिनी जी के चेहरे पर बह निकले थे। अपने शहर राजोरी में अपने घर पर सालों तक एकछत्र राज करने वाली शालिनी अपने पति की मृत्यु के बाद बड़े अधिकार, उमंग और शान से अपने बेटे के पास रहने आईं थीं। उन्हें अपनी संतान और अपने दिये संस्कारों पर बड़ा भरोसा था और इसी भरोसे की डोर पकड़ उन्होंने अपने पति के घर और उनके आस पास के लोगों की वहीं रुकने की प्यार और अपनेपन की मनुहार को नकार दिया था। मगर उन्हें आये लगभग तीन महीने होने जा रहे थे और अभी तक उनको इस बड़े से घर ने स्वीकारा नहीं था, अपनाया भी नहीं था। कई दशकों तक अपने घर परिवार को कुशलता से चलाने और अपने बेटे को पाल पोस कर इस बड़ी नौकरी तक पहुँचाने के बावजूद आज वे महसूस कर रही थी कि वे मूर्ख तथा अनुभवहीन हैं, उनके पास न तो जीवन का कोई अनुभव है, ना ही किसी के साथ रहने का।

शालिनी को याद आया कि कैसे वो अपने राजोरी वाले घर को संभालती थीं, उनकी उंगली के एक इशारे पर पूरा घर परिवार जैसे नाचने लगता था। सारे सुख उनके कदमों मे लोट लगाते थे, रिश्तेदारों और नौकरों से हमेशा भरा रहने वाला वह घर हर बात के लिये, हर काम के लिए उनका मुँह ताका करता था। पति ने घर परिवार और गृहस्थी संभालने की सारी लगाम उनके हाथों में सौंप दी थी। अपने परिवार की सारी जिम्मेदारियों और उत्तरदायित्वों को

बड़ी ही कुशलता से पूरा कर जब वे मुक्त हुईं तो उन्हें लगा था कि बस अब अपने पति के साथ जीवन के बाकी दिन भी इसी मान सम्मान और प्रतिष्ठा के साथ गुजार लेंगी मगर ईश्वर ने पति का साथ उनसे छीन लिया। उसी पति का, जिसके प्यार और विश्वास के दम पर वह अब तक जिंदगी की हर जंग को पूरे आत्मविश्वास और सम्मान के साथ लड़कर जीतती आई थी।

और जब उसी पति का साथ छूटा तो इसी बेटे का हाथ थाम वह इस घर में चली आई थीं। सोचा था जीवन का यह पड़ाव अब बेटे के साथ और प्यार के सहारे पार हो जायेगा, मगर तब वह कहाँ जानती थीं कि बेटे के घर में हर रोज किसी ना किसी बात पर उनके सम्मान पर चोट पहुँचेगी और अब तो उन्हें खुद भी लगने लगा था कि अब तक जो उन्होंने किया था, जो अनुभव उन्हें था वह सब व्यर्थ था। जिंदगी रोज एक नया अनुभव उन्हें देती थी।

सोचते सोचते जब उनका सिर फटने लगा तो उन्होंने ऑखें खोल दीं। भगवान को दीपक भी तो लगाना था – अरे यह तो रात ही हो गई। आठ बज रहे हैं। वो उठकर बाहर आईं हीं थीं कि उनके कानों में बहू की वही तीखी आवाज पड़ी, जो जहर समान उनके कानों में जाकर दिल में छाले सी कसकती थी'' अरे शांता बाई ....मम्मी जी को खाना उनके कमरे में ही दे आना। यहाँ टेबिल पर आकर बैठ जाती हैं तो मेरा तो निवाला गले से नीचे ही नहीं उतरता है। ऐसा लगता है हमारे कौर गिन रही हों ...वहीं कमरे में खा लिया करेंगी आज से। वैसे भी पापा जी के जाने के बाद उनको तो इतने समय में अकेले खाने की आदत हो गई होगी ना...। और डार्लिंग ! हम तुम भी इसी समय साथ बैठकर डिनर कर पाते हैं सुबह तो साथ खाने का समय होता ही नहीं।'' और डायनिंग टेबिल पर बेठे बेटे का ''हाँ'' में हिलता सिर देख उनके पैरों के नीचे से जमीन ही खिसक गई। बहू तो ठीक है मगर आज बेटा भी माँ के साथ बैठकर खाना नहीं खाना चाहता है यह वही बेटा है जो कभी हमेशा तभी खाता था जब वह पास बैठी हों मगर तब से आज तक बहुत कुछ बदल गया है।

वे पलट कर जल्दी से अपने कमरे में आकर बैठ गईं। शांता बाई आई और खाने की थाली रख गई और वह ....वह तो गुमसुम सी पड़ी उस समय को याद कर रही थीं, जब उनके राजोरी वाले बड़े से घर में खाने वालों की लाइन सी रहती थी और वह सबको बड़े प्यार व सम्मान से अपनी देखरेख में खाना खिलवाती थीं। जब वह बेटे के साथ यहाँ आ रहीं थीं तो आधा राजोरी आँखों में आंसू लिये विदा कर रहा था और निशा ...जो सालों साल उनके घर में काम करती हुई ही बड़ी हुई थी, संयोग से उसकी शादी राजोरी में होने से ही उसने उनके यहाँ का काम भी नहीं छोड़ा था और उसके पति के गुजरने के बाद तो जैसे वह जैसे इसी घर की हो गई थी ...बार बार उसकी आवाज कानों में गूंज रही थी'' अम्मा जी ...कहाँ उस परदेस में जा रही हो? यहीं रहो ना हम तो हैं तुम्हारी सेवा करने के लिये। अरे दादा चले गये तो क्या...आपके लिये हम सब तो हैं ना।'' कितना रोका था सबने।

तब ...तब वह बड़े ताव और उमंग में थी ..'' चुप हो जा निशा। अपने बेटे बहू के पास ही तो जा रही हूँ। काहे का परदेस अब तो वहीं जाकर मेरे मन और जीवन दोनों को

तब ...तब वह बड़े ताव और उमंग में थी ..'' चुप हो जा निशा। अपने बेटे बहू के पास ही तो जा रही हूँ काहे का परदेस अब तो वहीं जाकर मेरे मन और जीवन दोनों को शांति और ठिकाना मिलेगा ना। उसके मान मनुहार को नकारती आज वह यहाँ इस तरह थी। खाने की थाली वैसी ही पड़ी थी। सुबह जब शांता बाई भरी हुई थाली उनके कमरे से उठाकर ले गई तब बेटे ने माँ से आकर कहा ''माँ. तुमने रात को खाना नही खाया? क्या हुआ तबीयत तो ठीक है ना आपकी।'' वह उनके पास बैठता हुआ बोला था। उन्हें थोड़ा सा सुकून मिला चलो बेटा कम से कम पूछने तो आ ही गया था।

शांति और ठिकाना मिलेगा ना। उसके मान मनुहार को नकारती आज वह यहाँ इस तरह थीं। खाने की थाली वैसी ही पड़ी थी। सुबह जब शांता बाई भरी हुई थाली उनके कमरे से उठ कर ले गई तब बेटे ने माँ से आकर कहा ''माँ. तुमने रात को खाना नहीं खाया? क्या हुआ तबीयत तो ठीक है ना आपकी।'' वह उनके पास बैठता हुआ बोला था। उन्हें थोड़ा सा सुकून मिला चलो, बेटा कम से कम पूछने तो आ ही गया था।

वह भरी हुई बैठी थीं। खोया हुआ आत्मविश्वास फिर सिर उठा रहा था उसी की डोर पकड़ उन्होंने अपना निर्णय सुना दिया'' बेटा...सुन मेरा आज की गाड़ी से राजोरी का टिकट करा दे। मैं वापस अपने घर जाना चाहती हूँ।''

''वापस, मगर क्यों माँ? अचानक क्या हो गया।'' बेटा अचंभित था, सशंकित भी ।

'बस...। अब वहीं रहूंगी। यहाँ अब ना तो तुम्हारे गले निवाला उतरेगा और ना ही मेरे। अब मेरे जाने के बाद तुम दोनों को खाते वक्त घूरने वाला कोई नहीं रहेगा, तुम दोनों यहाँ चैन से दो रोटी खाना और मैं भी वहाँ चैन से दो रोटी खा सकूंगी।'' मैं अब तुम लोगों का सुख चैन नहीं चुराऊंगी। ''कहते कहते आवाज भर्रा सी रही थी, मगर निश्चय दृढ़ था। बेटे ने समझाने की बहुत कोशिश की, सफाई भी दी मगर उन्हें अब राजोरी में अपने घर के सामने की गली दिख रही थी, जहाँ वह हर जगह अपनेपन का उजास बिखरा हुआ देख रहीं थीं, ''नहीं बेटा अब रूक नहीं सकूंगी और अगर तकलीफ ना हो तो निशा को खबर करवा देना पड़ोस वाले चाचाजी के घर फोन करके। इतने सालों से वो राजोरी वाले घर में काम करती है तो वो अब से मेरे साथ ही रहेगी मेरी देखभाल करने के लिये। तुम दोनों को चिंता करने की कोई जरूरत नहीं और परेशान भी मत हो, अपना घर तुम्हें भी तो देखना है और फिर जब तुम्हारा मन करे वहाँ आ जाया करना वह भी तो तुम्हारा ही घर है आखिर।'' वह अडिग थीं।

और राजोरी पहुँचते ही उनका चैन, सुकून और अब तक का भूला हुआ आत्मविश्वास आसमान छू रहा था। बेटे बहू के घर के अनुभव भुला वह अपने उस छोटे शहर के बड़े दिल वाले लोगों के बारे में ही सोच–सोच कर अपनी आगे के जीवन के बारे में फैसला कर रहीं थीं घर के सामने पहुँचीं तो निशा मुस्कुराती हुई आरती का थाल लिये दरवाजे पर मौजूद थी। उस मुस्कुराहट में सब कुछ था प्यार, अपनापन मनुहार, शिकायत सब, वह अभिभूत थीं इसी के लिये तो वह यहाँ खिंची चली आई थीं भला वह यहाँ अब आज अकेली कहाँ हैं, आगे भी अकेली नहीं होगीं। उन्हें अपने लिये फैसले पर कोई पछतावा नहीं था।

उन्होंने अपने आंसू पोंछे, तब तक आसपास के लोग भी आ गये थे। सब खुश थे किसी की माँ जी लौटी थी,किसी की चाची तो किसी की दादी। इस अपनेपन और प्यार को अपने आंचल में समेट कर उन्होंने आत्मविश्वास के साथ अपने घर में प्रवेश किया था।

और अगले पन्द्रह दिनों के बाद ही उनके बड़े से घर के बड़े से आंगन में जाने कितने लोग जमा थे। एक कोने में दो तीन औरतें बड़ी पापड़ बना रही थीं, दूसरे कोने में दो औरतें खट्टी मीठी केंडी की मशीन लगाये उस पर काम करने में जुटी हुई थीं। बड़े–बड़े मर्तबानों में कई तरह का आचार बनाकर भरा जा रहा था। ये वे महिलायें थीं, जो बेसहारा थीं। उन्हें अपने घर में उन्होंने रहने के लिये जगह दी थी और अब वे औरतें यह काम कर स्वयंसिद्धा बन रही थीं और खुद शालिनी जी अपने इस छोटे से शहर में अपनेपन से भरे लोगों के बीच आ अपने आप को बड़ा ही खुश तथा तसल्ली से भरी हुई महसूस करती थीं।

रात को उस बड़े से घर के बड़े से आंगन में आस–पास के अनपढ़ लोगों के लिये स्कूल चलता था। अब हर समय उस घर में उम्मीदें हिलोरें लिया करतीं, लोगों के बिखरे खोये हुये आत्मसम्मान को जोड़ा जाता। शालिनी जी ने अपने जीवन के इस अंतिम पड़ाव को बेसहारा जरूरतमंदों के नाम कर दिया था। जीवन के इस पड़ाव पर आकर आज वो जाने कितने लोगों के खोये हुये आत्मविश्वास का पड़ाव बन गई थीं। ◆

पता : एमआईजी बी 31, राज्य परिवहन डिपो परिसर, भदभदा रोड, भोपाल म.प्र.–462003

मो. : 9826714443

राख के कण

❑ अंजू त्रिपाठी

बिसरा की चीखें आग की लपटों में दब गई, जब उसकी झोपड़ी लछमन और छोटू समेत राख में बदल गई।

खपरैल की छत से झाँकतीं टूटी–बिखरी बाँस की खपच्चियों के बीच से आकाश का एक टुकड़ा साफ दिखता था। मानों आसमान भी भीतर पसरी उदासी को देख रहा हो। बिसरा चुपचाप बैठी थी, उसकी सूनी आँखों में न आँसू थे, न रोष, न ही कोई प्रश्न...।

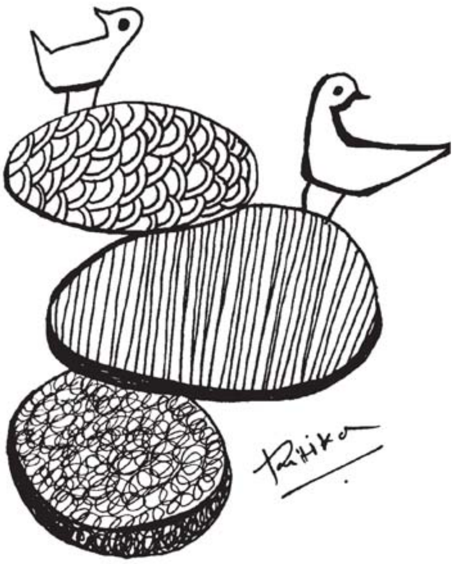

''मैं बड़ा, तू छोटा... तू गीदड़, मैं शेर...'' के स्वाँग ने चारों ओर तबाही मचा रखी है। गाँव हो या शहर, यह आग सब कुछ झुलसाती चली जा रही है। अभी तक मन में यह धारणा थी कि गांवों में मानवता की कुछ चिंगारियां अब भी साँस ले रही हैं, किंतु इस बार बिनवाना और सूरजपुर ने सबकी उम्मीदों को धता बताते हुए भयावह रंग दिखाया है।

हाँ! वही मानवता, जो कभी सभ्यता का गौरव थी, आज गगन में कुम्भकर्णी निद्रा में लीन प्रतीत होती है, मानो उसने अपनी संवेदनाओं को भुला दिया हो। इस अंधेरे युग में, लाखों लोग रुँधे गले और तृषित हृदयों के साथ शांति की गुहार लगा रहे हैं, किंतु उनकी पुकार उस कोलाहल में खो जाती है, जिसे आपसी नफरत और हिंसा ने रचा है।

इसी कोलाहल के बीच, एक हृदयविदारक त्रासदी ने बिनवाना गाँव को झकझोर दिया। बिसरा, एक बहुत सीधी–सादी, मेहनती औरत, जिसकी जिंदगी सिर्फ दो जून की रोटी से सजती थी, आज छाती पीटकर विलाप कर रही थी। उसकी रंगीन दुनिया पलक झपकते ही राख में बदल गई। किसी ने उसके पति और बेटे को उसी की लचर झोपड़ी में जलाकर मार डाला। उसकी आँखों के सामने लपटें सूरज–सी लाल रंग में उभरती हुई आकाश छूती चली गईं, और सब कुछ स्वाहा हो गया। वह चीखती–रोती रही, मगर आग ने उसकी पुकार को निगल लिया।

इस क्रूर कांड ने पूरे गाँव को स्तब्ध कर दिया। बूढ़ा, जवान–हर प्राणी इस असीम वेदना से व्याकुल था। गाँव का हर हृदय मानो चीर दिया गया हो, हर आँख में अनुत्तरित प्रश्न तैर रहे

थे। लोग एक–दूसरे को देखते, मगर शब्द गले में अटक जाते। इस त्रासदी ने न केवल बिसरा का घर उजाड़ा, बल्कि सभी की आत्मा को भी लहूलुहान कर दिया था।

बिनवाना की हवा में जलती लकड़ियों की धुँधुवाहट फैली थी। बिसरा की झोपड़ी, जो कभी उसकी छोटी–सी दुनिया का आशियाना थी, अब काली राख, टूटे–फूटे सामान और जली हुई लकड़ियों का मलबा बन चुकी थी।

समूचे गाँव ने एक स्वर में कहा कि बिसरा का दुख सबका दुख है, अतः पंचायत बुलाई जाए और उसके हितार्थ कुछ ऐसा किया जाए, जिससे उसके रहने का ठिकाना बन सके तथा रोटी–पानी का भी इंतजाम हो सके। उसी पुराने बरगद के पेड़ के नीचे पंचायत बुलाई गई, जिससे सौ कदम की दूरी पर बिसरा की मड़ई थी, जो हँसी–ठहाकों से कभी गुलजार रहती थी, आज करूण रूदन की मारक ध्वनि से कलेजा चीर रही थी।

बड़े–बुजुर्गों ने आपसी सहमति से फैसला सुनाया कि सच्चाई की जीत के लिए लड़ाई लड़ी जाएगी और बिनवाना का प्रत्येक व्यक्ति उस इंसाफ के लिए एकजुट खड़ा रहेगा। पंचायत के मुखिया रामधन चौधरी, गाँव के सबसे रसूखदार व्यक्ति थे। उनकी आवाज में एक ऐसी गंभीरता थी, जो हर शब्द को पत्थर की तरह वजनी बना देती थी– ''बिसरा... यह जो कुछ हुआ, वह हमारे गांव की आत्मा पर कलंक है। मैं, रामधन चौधरी, वचन देता हूँ कि जिसने यह कांड किया, उसे सजा जरूर मिलेगी।''

बिसरा, (जिसके चेहरे पर आँसुओं के निशान अब किसी अमिट छाप की तरह जम चुके थे) ने रामधन की ओर देखा। उसकी आँखों में न विश्वास था, न उम्मीद–सिर्फ एक खालीपन, जो उसकी आत्मा को निगल चुका था।

''चौधरी जी, मेरे आदमी और मेरे लाल को कौन लौटाएगा? यह आग... यह आग किसी दुश्मन ने नहीं लगाई। मेरे आदमी ने शायद कुछ ऐसा देखा था... कुछ ऐसा, जो उसे नहीं देखना चाहिए था।''

गाँव वालों के बीच खुसुर–फुसुर शुरू हो गई। लोग एक–दूसरे की ओर देखने लगे, जैसे कोई अनकहा सच हवा में तैर रहा हो ''क्या देखा था, बिसरा? साफ–साफ बोल, तुझे किसी से डरने की जरूरत नहीं है।''

बिसरा ने सिर झुका लिया और जहाँ की तहाँ चुपचाप बैठ गई। उसकी चुप्पी ने पंचायत को सकते में डाल दिया। रामधन ने सहानुभूति से लिपटे शब्दों में कहा–''देख बिसरा, पूरा गाँव तेरे साथ है। हम सब तेरे साथ थाने चलेंगे, वहाँ रिपोर्ट दर्ज करवाएँगे। जो भी इस घटना का जिम्मेदार होगा, उसे कतई बख्शा नहीं जाएगा। साथ ही यह भी वादा करता हूँ कि जब तक सभी की तरफ से तेरे लिए पैसे का इंतजाम नहीं हो जाता, तब तक आर्थिक सहयोग मैं करूँगा।''

पंचायत में तालियाँ बज उठीं। रामधन की बातों में एक आकर्षण था, जो लोगों को उसकी ओर खींच लेता था। लेकिन बूढ़ा मंगल काका, जो बरगद के नीचे चुपचाप बैठा था, रामधन को गौर से देख रहा था। उसकी आँखें रामधन की आत्मा को पढ़ने की कोशिश कर रही थीं।

सूरजपुर की रहने वाली बिसरा के जीवन में यदि कोई बड़ी खुशी नहीं थी, तो उसे कोई गहरा दुःख भी नहीं था। अपनी छोटी–सी दुनिया की वह महारानी थी। उम्र के तेरहवें पड़ाव में ही उसकी शादी लछमन से हो गई थी, जो बिनवाना गाँव का रहने वाला था। लछमन मेहनती और सज्जन पुरुष था। उसके सीधे और कर्मठ स्वभाव के कारण गाँव के सभी रसूखदार लोग उसे अपने यहाँ काम पर रखना चाहते थे।

बिसरा और लछमन ने अपनी मेहनत से एक छोटी–सी झोपड़ी बनाई थी। उस झोपड़ी में उनका बेटा छोटू, उनकी दुनिया का सूरज, हर सुबह उनकी आँखों में उजाला बिखेरता था। किंतु बिसरा का अतीत कभी–कभी उसकी आत्मा को कुरेदता। सूरजपुर में उसके परिवार का हरिया के खानदान से पुराना बैर था– जमीन का एक छोटा–सा टुकड़ा, जो पीढ़ियों से तनाव का कारण बना हुआ था।

रामधन चौधरी, बिनवाना का सबसे बड़ा जमींदार था। हर गरीब घर में उसकी हुकूमत चलती थी। लछमन बिना किसी हील–हुज्जत के पूरी ईमानदारी से अपना काम खत्म करता था। यही कारण था कि रामधन और उसकी पत्नी सावित्री अपने घर के छोटे–बड़े सभी कामों के लिए उसी को बुलाते थे। बिसरा और लछमन, दोनों ही मन लगाकर मेहनत–मजदूरी करते। इससे खुश होकर सावित्री अक्सर उन्हें कुछ न कुछ अतिरिक्त इनाम में दे दिया करती थी। जिसे वे दोनों बड़े गर्व से गाँव भर में बताते और चौधरी जी का गुणगान करते।

उस रात, बिसरा के पति लछमन और बेटे छोटू ने खेत की रखवाली करते हुए कुछ देखा था। बिसरा उस समय घर पर थी। लछमन ने घर लौटकर बिसरा को बताया–''मैंने रात को दो लोगों को देखा, जो सूरजपुर गाँव की ओर भाग रहे थे, लेकिन धुंध की वजह से चेहरा ठीक से नहीं देख सका... बस इतना अंदाजा लगा कि...''

राधा, सूरजपुर के हरिया की इकलौती बेटी, अपनी सादगी और शर्मीले स्वभाव के लिए जानी जाती थी। उसकी आँखों में खेतों की हरियाली थी, लेकिन मन में एक बेचैनी थी, जो उसे गाँव की छोटी–सी दुनिया से बाहर ले जाना चाहती थी। दो साल पहले, गाँव के मेले में उसकी मुलाकात रघु से हुई रामधन चौधरी का बेटा, जिसकी बातों में मिठास थी और चाल में अपने बाप का रुतबा। रघु ने राधा को शहर की चमक–दमक की कहानियाँ सुनाईं। बड़े–बड़े मकान, रंग–बिरंगी सड़कें और एक ऐसी जिंदगी, जहाँ कोई उसे खेतों तक सीमित न रखे। राधा की सादगी उसके जादू में बँध गई।

पहले तो उनकी मुलाकातें मेले की भीड़ या खेतों की मेड़ों पर छिप–छिपकर होती थीं। रघु उसे हँसाता, कभी उसका हाथ थामता और वादा करता – ''राधा, मैं तुझे इस गाँव की छोटी सोच से आजाद कराऊँगा। हम शहर में अपनी दुनिया बसाएँगे।''

राधा, जिसके लिए प्रेम एक अनजाना सपना था, उसके वादों में खोने लगी। लेकिन जैसे–जैसे समय बीता, उसे रघु की बातों में खोखलापन दिखने लगा। जब वह शादी की बात करती, रघु बात टाल जाता ''बस, थोड़ा और वक्त, राधा। पिताजी को मनाना पड़ेगा।''

हर बार रघु राधा से यही कहता ''यहाँ से भाग चल, गाँव की रूढ़ियाँ छोड़ दे।'' लेकिन राधा डरती थी उसके पिता हरिया और चाचा बलराम का गुस्सा, सूरजपुर और बिनवाना का पुराना बैर और गाँव की निगाहें उसे रातों को जगाए रखती थीं।

एक रात, रघु ने उसे जबरदस्ती अपने साथ चलने को कहा ''अगर तू नहीं चली, तो मैं खुद को मार डालूँगा!''

उसी रात, लछमन, (जो रामधन के खेतों की रखवाली कर रहा था) ने रघु और राधा को एक साथ देख लिया। धुंध भरी रात में चेहरों को स्पष्ट न देख पाने के बावजूद लछमन को शक हो गया। उसने घर लौटकर बिसरा से कहा– ''मैंने रघु को किसी लड़की के साथ देखा है...।''

लछमन की बात अधूरी थी, लेकिन उसकी आवाज में चिंता थी। अगले दिन सूरजपुर में हंगामा मच गया। हरिया अपनी बेटी को ढूँढ रहा था। बलराम ने गाँववालों को इकट्ठा किया और बिनवाना की ओर रुख किया।

''रामधन! तेरे गाँव ने मेरी भतीजी को गायब किया है! अगर उसे कुछ हुआ, तो मैं तुझे और तेरे गाँव को नहीं छोड़ूंगा!''

रामधन ने बलराम को शांत करने की कोशिश की– ''बलराम, तू मेरे गाँव पर गलत आरोप मढ़ रहा है। मेरे गाँव का कोई ऐसा नहीं कर सकता। पहले सबूत ला, फिर बात करेंगे।''

लेकिन बलराम और हरिया के गुस्से के आगे रामधन की बातें बेकार थीं। एक–दूसरे के चूल्हे पर अपनी रोटी सेंकने को सभी उतावले थे। सूरजपुर के कुछ नौजवानों ने बिनवाना की सीमा पर पथराव शुरू कर दिया। दोनों गाँवों के बीच तनाव चरम पर पहुँच गया।

फिर से पंचायत की बैठक बुलाई गई। बिना समय गंवाए रामधन ने सभी को बिसरा के साथ थाने चलने के लिए कहा। बिनवाना के लोगों ने चौधरी जी को देवता स्वरूप बताया–कहा कि अगर लछमन ने उनके परिवार की सेवा की है, तो चौधरी साहब भी मदद करने से पीछे नहीं हट रहे हैं।

चौधरी साहब ने भरी पंचायत में घोषणा की ''भले ही सब लोग डर कर पीछे हट जाएँ, किंतु मैं बिसरा के साथ रहूँगा और उसके पुनर्वास का सारा खर्च उठाऊँगा। साथ ही इस कांड के पीछे जो भी होगा, उसे सजा दिलवाऊँगा।'' सावित्री भी वहाँ थी। वह बिसरा को गले लगाकर रोने लगी– ''बिसरी, तू चिंता मत कर, हम तेरे साथ हैं।''

लेकिन मंगल काका और कुछ अन्य लोग सावित्री की बातों पर भरोसा नहीं कर पा रहे थे। उन्हें लग रहा था कि सावित्री की मिठास में एक ऐसा जहर है, जो कभी भी दंश मार सकता है। सावित्री ने गाँव की औरतों को इकट्ठा किया और कहा– ''यह सब सूरजपुर वालों की साजिश है। उन्होंने बिसरा का घर जलाया, क्योंकि वे हमारे गाँव की तरक्की से जलते हैं।''

थाने में रामधन ने बिसरा को एक कागज पर अँगूठा लगाने को कहा– ''बिसरा, यह रिपोर्ट है। हम सूरजपुर के हरिया और बलराम के खिलाफ शिकायत दर्ज करेंगे। चारों ओर से पता करने पर यही अंदाजा लगा है कि उन्होंने ही यह आग लगवाई थी।''

बिसरा ने कागज की ओर गौर से देखा। वह अनपढ़ थी, फिर भी उसने पन्ने को इस तरह छूना शुरू किया जैसे उसमें लिखे शब्दों को महसूस कर रही हो।

सिसकती हुई उसने कागज पर अँगूठा लगा दिया। हरिया और बलराम को जब थाने से समन मिला, तो सूरजपुर में तूफान मच गया। बलराम ने गाँववालों को इकट्ठा करके कहा– ''रामधन हमें फँसाने की कोशिश कर रहा है! मेरी भतीजी को उसके बेटे ने भगाया और जब बात उसके परिवार पर आई, तब लोगों को भुलावे में रखने और ध्यान भटकाने के लिए बिसरा की झोपड़ी में लगी आग का इल्जाम हम पर मढ़ रहा है!''

हरिया ने बलराम को शांत करने की कोशिश की और समझ–बूझ के साथ आगे कदम रखने को कहा, किंतु बलराम का गुस्सा अब काबू से बाहर था। उसने बिनवाना की सीमा पर अपने आदमियों को भेजा। दोनों गाँवों के बीच मार–पीट हुई। निर्दोषों की पिटाई हुई, तनाव और ज्यादा बढ़ गया।

गाँव में अफवाहें फैलने लगीं। कुछ लोग कह रहे थे कि लछमन ने जरूर सूरजपुर की लड़की राधा को किसी के साथ देखा था। कुछ का कहना था कि यह आग सूरजपुर वालों का बदला थी। शाम होते–होते पुलिस ने पूछताछ के नाम पर हरिया और बलराम को थाने में बंद कर दिया।

मंगल काका ने गाँव के कुछ नौजवानों को इकट्ठा किया और जोर देकर कहा–''यह सब इतना साधारण नहीं है, जितना कि हमें दिख रहा है। लछमन ने निश्चित रूप से कुछ ऐसा देखा था, जो उसके साथ ही दफन हो गया। हमें सच ढूँढना ही होगा!''

लछमन का जिगरी दोस्त गोपाल और कुछ अन्य साथी काका की बात से पूरी तरह सहमत थे। काका की आँखों में एक ऐसी आग थी, जो सत्य को राख के नीचे दबने नहीं देना चाहती थी।

सबने एक स्वर में फैसला किया कि सूरजपुर जाकर राधा को ढूंढ़ा जाए, क्योंकि लछमन की आखिरी बातों में सूरजपुर का जिक्र था। गाँव की हवा में तनाव की गंध थी– बिनवाना से आए इन नौजवानों को वहाँ हर आँख शक से देख रही थी। गलियों में दबी जबानों से ऐसी बातें हो रही थीं, जैसे हर दीवार कोई राज छिपाए हो।

कई दिनों की खोज के बाद, गोपाल और उसके साथियों ने राधा को एक दूर के रिश्तेदार की टूटी–फूटी झोपड़ी में पाया। वह एक कोने में सिमटी बैठी थी, मानो दुनिया से छिप जाना चाहती हो। उसका चेहरा पीला पड़ चुका था, आँखें लाल थीं, और हाथ बेतरतीब काँप रहे थे। गोपाल ने धीरे से उसका नाम पुकारा–''राधा... हम लछमन के दोस्त हैं। इन दिनों दोनों गाँवों के बीच जो कुछ हुआ है, तुम सब जानती हो न? हमें सच बताओ, ताकि बिसरा को इंसाफ मिल सके।''

राधा ने सिर उठाया, लेकिन उसकी आँखों में डर ऐसा था, जैसे कोई अनदेखा साया उसका पीछा कर रहा हो। वह चुप रही, सिर्फ साँसों की हल्की सरसराहट उसकी मौजूदगी का सबूत थी।

मंगल काका ने पास आकर उसकी ओर देखा। उनकी आवाज में वही गंभीरता थी, जो बरगद के पेड़–सी अटल थी– ''बेटी, हम जानते हैं तू डरी हुई है, लेकिन लछमन और छोटू की राख अभी भी गाँव की हवा में तैर रही है। उनके लिए... बिसरा के लिए, तुझे बोलना ही पड़ेगा।''

राधा की आँखों में आँसू उमड़ आए, लेकिन उसके होंठ अब भी सिले रहे। गोपाल ने एक कदम और बढ़ाया ''राधा, लछमन ने हमें बताया था कि उसने रात को तुम्हें किसी के साथ देखा था। क्या वह रघु था? बोल– राधा, सच बोल!''

राधा का शरीर काँपने लगा। उसने सिर झुका लिया, जैसे सच कहना उसके लिए आसमान पर चढ़ने जैसा हो। फिर, एक लंबी खामोशी के बाद उसकी टूटी–फूटी आवाज निकली– ''मैं... मैं कुछ नहीं जानती। उस रात... मुझे बस वो ले गया था। मैं डर गई थी... उसने कहा था कि अगर मैंने मुँह खोला, तो मेरे घर को बर्बाद करके सबको मार डालेगा।''

उसकी आवाज में दहशत थी। हर शब्द के साथ वह और सिमटती जा रही थी। गोपाल और मंगल काका एक–दूसरे की ओर देखने लगे। राधा ने रघु का नाम नहीं

लिया, लेकिन उसकी आँखों का डर और अधूरी बातें बहुत कुछ कह रही थीं।

झोपड़ी के बाहर सूरजपुर की गलियों में सन्नाटा पसरा था, माहौल में भारीपन था, जैसे कोई तूफान आने को हो। गोपाल ने मंगल काका से धीरे से कहा– ''काका, राधा डरी हुई है, लेकिन उसने जो कहा, उसमें रघु की साये–सी छाप है। हमें और सबूत चाहिए।''

काका ने सिर हिलाया। उनकी आँखें अब सूरजपुर की सीमा से परे, बिनवाना की ओर देख रही थीं। गोपाल ने लछमन के खेत के पास कुछ संदिग्ध निशान देखे। वहाँ कुछ जली हुई लकड़ियाँ और एक डिब्बा पड़ा था। गोपाल ने वह डिब्बा उठाकर मंगल काका को दिखाया– ''काका, यह तेल का डिब्बा रामधन के गोदाम से मिलता–जुलता है।''

मंगल काका की आँखें सिकुड़ गई। ''यह बात किसी को मत बताना, गोपाल। रामधन को शक हो गया, तो वह पहले ही बाजी पलट देगा और हम हाथ मलते रह जाएँगे।''

उसी रात, बिसरा ने मंगल काका से मुलाकात की– ''काका, मेरे आदमी ने मुझे बताया था कि उन्होंने रात को दो लोगों को देखा था–एक लड़का और एक लड़की। लेकिन उन्होंने नाम नहीं बताया। मुझे लगता है कि वह रघु था।''

मंगल काका ने बिसरा के माथे पर हाथ फेरा और कहा– ''बिसरा, तू हिम्मत मत हार। हम सच जरूर ढूँढ लेंगे, लेकिन अभी चुप रहना जरूरी है।''

सावित्री को किसी तरह बिसरा और मंगल काका की बातचीत का पता चल गया। उसने यह बात रामधन को बताई और रामधन ने अपने नौकर मंगरू को बुलाया–''मंगरू, मंगल काका और गोपाल कुछ ज्यादा ही सवाल उठा रहे हैं। उन्हें चुप कराने का इंतजाम कर।''

एक दिन, बिनवाना में अचानक पंचायत बुलाई गई–बिना किसी पूर्व सूचना के। यह सबके लिए कौतूहल का विषय था। दरअसल, गोपाल और उसके दोस्त सूरजपुर गए थे और राधा को बिनवाना गाँव लाने में कामयाब हो गए थे। राधा को पंचायत में लाया गया। गाँववालों के सामने वह काँप रही थी, लेकिन जब उसने बिसरा की ओर देखा, तो उसे हिम्मत मिली।

''मैं सच बोलूँगी। मुझे रघु ने जबरदस्ती भगाया था। उसने कहा था कि अगर मैंने किसी को बताया, तो वह मेरे परिवार को मार डालेगा। मुझे यह भी यकीन है कि लछमन काका और छोटू को इसलिए मारा गया, क्योंकि उन्होंने हमें देख लिया था।''

गाँव में सन्नाटा छा गया। रामधन का चेहरा सफेद पड़ गया। उसने चिल्लाकर कहा– ''यह झूठ है! यह सब हरिया और बलराम की साजिश है!''

सावित्री ने भी राधा को डाँटने की कोशिश की, लेकिन गाँववालों का गुस्सा अब फूट पड़ा था। मंगल काका ने तेल का डिब्बा सामने रखा और बोला– ''रामधन, यह डिब्बा तेरे गोदाम से मिला है और आग लगने वाली रात को तेरा नौकर मंगरू, लछमन के खेत के पास देखा गया था।''

मंगरू, जो भीड़ में खड़ा था, अचानक भागने की कोशिश करने लगा। गाँववालों ने उसे पकड़ लिया। पुलिस को बुलाया गया और थोड़ी ही सुटाई के बाद मंगरू ने सच उगल दिया– ''यह सब चौधरी जी और रघु का काम था। रघु ने मुझे कहा था कि लछमन और छोटू को चुप कराना है, क्योंकि उन्होंने उसे राधा के साथ देख लिया था।''

रघु, (जो अब तक शहर में छिपा हुआ था) को पुलिस ने गिरफ्तार कर लिया। पूछताछ में वह टूट गया और उसने कबूल किया कि उसके पिता ने ही लछमन और छोटू की झोपड़ी में आग लगवाई थी। जब उसे अंदेशा हुआ कि लछमन ने उसे राधा के साथ देख लिया है, तब वह घबरा गया। यह बात सावित्री के माध्यम से रामधन तक पहुँची। फिर रामधन ने अपने नौकर मंगरू को आदेश दिया कि किसी भी तरह से लछमन को चुप करवा दिया जाए।

पुलिस ने रामधन, सावित्री और रघु–तीनों को गिरफ्तार कर लिया। गाँव में इंसाफ की बातें होने लगीं। लोगों ने माना कि अपने कर्मों का फल हर किसी को मिलता है।

बिसरा ने अपनी झोपड़ी की राख को छुआ और मन ही मन लछमन और छोटू से वादा किया– ''तुम्हारा इंसाफ हो गया। अब मैं बिना किसी अपराधबोध के साँस ले सकूँगी।''

समय के साथ बिनवाना की हवा बदलने लगी थी। गाँव की गलियों में नया शोर गूँज रहा था– सत्ता का शोर, वादों का शोर और उस चमक का शोर, जो सच को अँधेरे में धकेल देता है।

रामधन और सावित्री, जिन्हें जेल की सलाखों ने कुछ

वक्त के लिए कैद किया था, अब आजाद थे। उनके पुराने रसूख, शहर के बड़े नेताओं से रिश्ते और पैसे की ताकत ने उन्हें फिर से बिनवाना की जमीन पर खड़ा कर दिया।

जेल से निकलते ही रामधन ने अपने बेटे को सत्ता की सीढ़ियों पर सबसे ऊपर बैठाने का बीड़ा उठाया। उसने अपने पुराने सहयोगियों को इकट्ठा किया, सावित्री ने गाँव की औरतों को अपने जाल में फँसाया और दोनों ने मिलकर रघु को एक नया चेहरा दे दिया। कुछ ही महीनों में एक प्रमुख राजनीतिक दल ने रघु को विधायक प्रत्याशी के रूप में टिकट दे दिया।

बिनवाना के बाजार से लेकर सूरजपुर की गलियों तक रघु की तस्वीर वाले होर्डिंग्स चमक रहे थे। सफेद कुर्ते में हाथ जोड़े मुस्कुराता हुआ रघु हर होर्डिंग पर लिखे नारे के साथ गाँववालों को लुभा रहा था–

''रघु चौधरी नया सूरज।'' आपका ईमानदार, कर्मठ और मेहनती बेटा। गाँव की तरक्की का अखबार उसे ''युवा जोश'' और ''गाँव का गौरव'' बता रहे थे। उसकी जवानी की गलतियों को ''अतीत की भूल'' कहकर भुला दिया गया।

रामधन और सावित्री दिन–रात एक किए हुए थे। रामधन नेताओं से सौदे करता और सावित्री गाँव की औरतों को रघु की तारीफों से रिझाती। दोनों का एक ही मकसद था– रघु को सत्ता के सिंहासन तक पहुँचाना, ताकि चौधरी खानदान का नाम फिर से बुलंद हो।

रघु की रैलियों में ढोल–नगाड़े गूँजते। नौजवान उसके नारे दोहराते और बच्चे उसके झंडे लहराते। रामधन मंच के पीछे खड़ा हर चीज पर नजर रखता। सावित्री भीड़ में घूमती लोगों को रघु के वादों का भरोसा दिलाती– ''हमारा रघु बदल गया है, वह अब गाँव की भलाई के लिए जिएगा।''

कुछ गाँव वाले, जो रामधन के एहसानों तले दबे थे, उनके साथ हो लिए। कुछ डर के मारे चुप रहे। मंगल काका और गोपाल जैसे लोग गुस्से में थे, लेकिन उनकी आवाज उस शोर में दब चुकी थी।

बिसरा सब कुछ चुपचाप देख रही थी। वह अब भी एक छोटी–सी झोपड़ी में रहती थी, जो गाँव वालों ने उसके लिए बनाई थी। उसकी आँखों में अब कोई खालीपन नहीं था, बल्कि उस खालीपन की जगह गहरी उदासी ने ले ली थी–जो किसी समंदर की गहराई–सी लगती थी।

वह बाजार में रघु के होर्डिंग्स को देखती, उसकी रैलियों के ढोल सुनती और रामधन–सावित्री की चालों को महसूस करती–लेकिन कुछ बोल नहीं पाती थी।

एक शाम, रघु की सबसे बड़ी रैली बिनवाना के मैदान में हुई। हजारों लोग जमा थे। मंच पर रघु खड़ा था, उसके पीछे रामधन और सावित्री, दोनों गर्व से सिर उठाए। रघु की आवाज माइक में गूँजी–

''मेरे गाँव वालो, मैं आपका बेटा हूँ, भाई हूँ। मेरे माता–पिता ने आप सबके लिए, हमारे गाँव के लिए सब कुछ दाँव पर लगा दिया। अब आपकी बारी है–मुझे एक मौका दीजिए, मैं बिनवाना को आसमान पर ले जाऊँगा !''

भीड़ ने तालियाँ बजाईं, नारे लगाए। सावित्री ने भीड़ में बिसरा को देखा, जो दूर बरगद के पेड़ के नीचे खड़ी थी। उसकी आँखों में विजयी चमक थी, जैसे वह बिसरा को चुनौती दे रही हो।

बिसरा उस शोर से दूर, अपनी झोपड़ी के आँगन में लौट आई। उसने लछमन और छोटू की छोटी–सी तस्वीर को छुआ, जो उसने अपनी झोपड़ी की दीवार पर टाँग रखी थी। हवा में रघु के नारों की गूँज आ रही थी, लेकिन बिसरा की दुनिया में सिर्फ सन्नाटा था। उसने चूल्हे से मुट्ठी भर राख ऐसे उठाई, जैसे वह लछमन और छोटू की आखिरी निशानी को थाम रही हो। बाहर आकर उसने राख को हवा में उड़ा दिया और भीतर चली आई।

राख के कण हवा में तैरते हुए रघु की रैली की ओर बढ़े–जैसे कोई अनदेखा सच उस तमाशे को ललकार रहा हो। कुछ कण मंच तक पहुँचे, जहाँ रघु अपनी बातों का जादू बिखेर रहा था। एक कण सावित्री के चेहरे पर गिरा, उसकी मुस्कान एक पल के लिए ठिठकी।

रैली का शोर तेज हुआ और बिसरा अपनी झोपड़ी में शांत हो गई। ◆

पता : 216, ए ग्रीन अर्पाटमेंट, राजौरी गार्डन, नई दिल्ली–110027

मो. : 7678499818

एक भगवान...ऐसे भी

❑ भावना झा

वैसे तो सबके मुंह पर बात बे बात भगवान आ विराजते हैं, पर इस सशरीर उपस्थित भगवान को देखते ही सब बगलें झांकने लगते। पूरे गांव में शायद ही कोई व्यक्ति हो जिसका मुंह भगवान के नाम पर बिदक ना जाता या उस पर बात करना चाहता। अरे! भगवान माने ईश्वर वाले भगवान की बात नहीं हो रही। उन्हें कहां फुरसत जो आ कर झमेले में पड़े.!

वो तो बंसी बजाते चैन से मुस्कुराते ही भले। ये भगवान तो अलबेले अलमस्त साक्षात् प्रकट।

आगे नाथ ना पीछे पगहा। एक दुआर पर सुबह, तो किसी और के दालान पर सांझ। कभी अमराई में मचान पर बैठ मुआयना करते...कुल आमों का... ''खा–खिला के नहीं कुछ तो पांच हजार तो चौधरी बना ही लेगा...,'' या कभी दिख जाते गांव के बाहर स्कूल के मैदान में बैठे।

हर आते जाते विद्यार्थी से तेरह का पहाड़ा पूछते... बच्चे भी शैतान... अव्वल तो कोई पकड़ ना आए, कोई हाथ आया भी तो मास्टरजी की दुहाई दे छुटकारा पाने की कोशिश करता।

मन में आया तो टेक दिया माथा मंदिर के आगे। दुर्गा सप्तशती के एकाध श्लोक का उच्च स्वर में पाठ करके पुजारी को कर्म काण्ड सिखा चरणामृत ले धन्य कर देते ईश्वर को। अगर दिमाग फिरा रहा, भोर से महादेव का प्रसाद भांग नहीं चढ़ा तो देवता की भी खैर नहीं, इतना कोसते बंसी वाले को, उनके पुरखों तक को नहीं छोड़ा जाता। जाति से ब्राह्मण भगवान की मां छुटपन में गुजर गई, पिता पंडिताई करते थे। सर छुपाने की जगह मंदिर में मिली थी। पिता के जाने के बाद गांव के लोगों ने बहुत कहा मंदिर का भार अब भगवान के भरोसे ही, पर सारे भरोसे को ताक रखते भगवान ने हाथ खड़े कर दिए। नियम कानून से बंध कर चलना शान के खिलाफ था भगवान के। संबंधों के नाम पर ले देकर एक दूर की मौसी थी जो स्नेह रखतीं उस पर, जिसका कहना था कि ''जी को टिका कोई काम धंधा पकड़, पंडिताई ना सही चौधरी को बोल कर दुकान पर रखवा देते हैं।

रहने को सर पर छत भी हो जाएगी और घर भी बस जाएगा तुम्हारा, तो चैन से बहन को मुँह दिखा पाऊंगी, लड़की देख रखी है, जिनगी संवर जाएगी तेरी भगवान''!

और जिनगी संवारने वाली का अनदेखा, अनजाना चेहरा अमलताश के पीले फूलों सा सामने छाने को होता कि भगवान अपने को सचेत कर मौसी का कंधा झकझोर पतझड़ सी सूखी हंसी हंस कर कहते...

''अब तुम हमारे गले घेघ लटकाओगी तो क्या हम लटकाने देंगे, इन सब पचड़ों में हम नहीं पड़ने वाले'' बेचारी वह मौसी भी साल दो साल बाद गुजर गई। कठकरेज तो होते ही हैं भगवान, सो और भी मन से अकेले हो गए, पर फिर भी हंसते मुस्कुराते कभी किसी पर बरसते तो कभी खीझ जाहिर करते। गांव के हर परिवार का ही सदस्य खुद को मानने लगे। कभी यादवों के टोले में पहुंच जाते तो कभी मिश्राइन के यहां गला खखारते हुए असमय ही घुसते...

''बबुआ बोल माई को मामा आए हैं, जल्दी मलाई वाली चाय दलान पर भिजवाए।'' कह के वहीं दरवाजे पर पसर जाते। बेचारी आंगन में बहू हुलस कर झांकने आती अपने असमय पधारे भाई को, पर भगवान को पैर पसारे दलान पर बैठा देखते ही उल्टे पांव लौट बबुआ पर बरस पड़ती।

''काहे का भाई, कौन सा भाई, कितनी बार समझाया इनको बोल दें मुंह खोल के यहाँ कौन सा बहनापा जोड़ने आ जाते हैं।''

बड़बड़ाती बबुआ की मां बरतन पटक पटक कर अपना समय बर्बाद होने का अफसोस करती। उधर भगवान बबुआ को समझाते, अरे कैसे ना हुई बहन तेरी मां, तुम्हारी नानी मेरी मां की ये वो..कहते कहते संबंधों का जाल तब तक ना सुलझता जब तक आंगन से चाय ना आ जाती...।

अपने आपको सभी का ज्येष्ठ मनवाने का भी बड़ा शौक, ना मानो तो जी भर भुनभुनाते। ''ओ काकी हम कहते हैं ई रामेसरा को हम गोदी खिलाए हैं, ना लाज ना शरम इसकी औरत हमसे पर्दा काहे नहीं करतीं''।

''कितना गला खखारते रहे, पर बेशर्म जैसे बच्चे को सड़क किनारे ही दूध पिला रही थी।'' और फिर ठन जाती काकी के संग थोड़ी देर सबका मनोरंजन होता फिर समझा बुझा सब अपनी राह लेते और वहीं कोई भगवान का गुस्सा शांत कराने बोल देता, ''बहुत दिनों से माई कह रही थी तुम आए नहीं, उनके हाथ की खीर की याद नहीं आई क्या...?'' और भगवान पल में मोम बन जाते ''अरे आएंगे कैसे नहीं अब काम ही इतना हो जाता''!

अब कौन सा काम ये सोच कर सब एक दूसरे की चुटकी लेते और भगवान खीर का स्वाद लेने वहां से रफूचक्कर। गांव का कोई आदमी सीधे मुंह चाहे बात ना करता हो पर उनकी नाराजगी से सबको फर्क पड़ जाता था और लग जाते थे सभी मनाने! बदलते वक्त की हवा कितनी भी तेज क्यों न हुई, पर गांव की सरहद तक पहुंचते पहुंचते रफ्तार कम हो ही जाती है। मानवीय सरोकार या संवेदना कहीं न कहीं सबमें सांस ले ही रही थी।

गांव की मुख्य कच्ची सड़क जो बरसात में और भी खस्ता हालत में आ जाती थी उसका बड़ी मुश्किल से इस बार मुखिया जी ने टेंडर पास करवा दिया। साथ तो सबका मिला पर विकास कितना हुआ ये तो ईश्वर ही जानता है।

दो एक सालों में चुनाव भी आने वाला था कुछ तो मुंह दिखाने के काबिल रहें विधायक महोदय! गांव वाले बड़े खुश अब सायकिल, मोटरसाइकिल को घसीटते हुए ना जाना पड़ेगा। औरतों का मायका ससुराल का आना जाना भी सुलभ होगा.. बड़ी हुज्जत होती थी पाँच किलोमीटर पैदल जा के बस पकड़ना।

जोर शोर से काम शुरू हुआ ईंटों के ट्रक आना। गारे सीमेंट की बोरियां गिराना चालू हुआ। आधी सड़क बन तैयार भी हो गई, उधर से आवाजाही पर पाबंदी थी, गांव के लोग—बाग भी खुश हो रहे थे, पर कुछ शरारती तत्वों का व्यवधान उत्पन्न करने का काम भी चल रहा। ठेकेदार की शिकायत थी कि कभी रात को ईंटें गायब तो कभी दो बोरियाँ सीमेंट की कम पड़ जातीं। बात मुखियाजी के कानों तक भी पहुंच गई...। विचार विमर्श के बाद तय किया गया कि रात को निगरानी के लिए किसी को रखा जाए। छैल छबीले गाँव के नौजवानों ने तो पहले मना कर दिया। किसी ने सुझाव दिया कि भगवान को ही निगरानी पर रहने का

बोल दिया जाए कुछ पैसे हाथ में रखकर, अगर मान गए तो ठीक है। ऐसे उनसे बात मनवाना भी कम दुरूह काम नहीं। मुखिया जी ने बुलाया तो हाथ में खैनी रगड़ते हुए भगवान हाजिर !

''आज हमसे कौन सा काम आ पड़ा?'' बिना लाग–लपेट के भगवान का सीधा सवाल था। मुखिया जी ने बताया ''देखो ये गांव सबका है तो कुछ जिम्मेदारियां भी बनतीं हैं, गांव का विकास हो ये कौन नहीं चाहेगा पर कुछ हैं लुच्चे, लंपट जो नहीं चाहते हैं सड़क बने ..आपको कुछ नहीं करना बस बैठे रहना है निगरानी के लिए, इधर उधर दिन भर घूमने से तो अच्छा कुछ गाँव–देश से भी प्रेम कर जिम्मेदार नागरिक का फर्ज निभाया जाए''...। और भगवान के हृदय में देशभक्ति का जज्बा क्षण भर में ही मुखिया जी जगाने में कामयाब हुए!

''हाँ तो काहे नहीं चाहेंगे गाँव का विकास हो, देखते हैं कौन अड़ंगा डालता है''। और भगवान स्थापित हो गए उसी दिन से पीपल के पेड़ के नीचे साथ में एक झोले में अपना सामान, महादेव का प्रसाद भांग जिसके बिना तो आँख ही ना खुले उनकी और एक लाठी मजबूत सी जो चलते–चलते मुखिया जी के दरवाजे से उठा लाए थे। सुबह–शाम का खाना मुखिया जी का नौकर दे ही जाता। चाय की व्यवस्था भी करवा दी गई थी मोड़ पर एक छोटी सी दुकान से।

सड़क पूरी सीमेंटेड बन रही थी तो एक बैरिकेड बांस का डाल आने जाने का रास्ता रोक दिया गया था! भगवान अपने आपको इस महत्वपूर्ण कार्य में योगदान देने के लिए गदगद हो पीठ ठोकते। ''मुखिया जी ने कहा सड़क का उद्घाटन करने विधायक आएंगे नाम तो मेरा भी लेंगे। हो सकता है एक आध फोटो भी अखबार में आ जाए''। यह सोचकर भगवान मन ही मन स्वयं को आश्वस्त करते।

दिसंबर का महीना अच्छी खासी ठंड पड़ रही थी, शाम से ही कुहासा छा पूरे गाँव को ढंक लेता था, लोग खा–पी जल्द ही रजाई में दुबक जाते। आसपास से लकड़ियाँ सूखे घास इकठ्ठा कर, अलाव जला भगवान भाँग का प्रसाद ग्रहण कर ऊँचे स्वर में नचारी गा रहे हैं ''शिव हो उतरब पार कोअन विधिना...''

ठिठुरन भरी सर्दी की रातें तो वैसे भी लंबी होती ऊपर से सांझ से ही सन्नाटा छाया रहता। ग्यारह बजे तक तो गांव आधी नींद में डूब जाता ..एक चक्कर लगा भगवान भी चार पांच नचारी गा सोने की तैयारी कर रहे थे। तभी सामने से तेज रफ्तार से आती मोटरसाइकिल की रोशनी आंखों में पड़ी। ''अरे कौन है आँखों पर हाथ डालते पूछा'' ई फटफटिया कहाँ घुसा रहे भाई?

टार्च की रोशनी डाल कर देखा तो किशन सरपंच का मुंहफट बिगड़ा बेटा नशे में मोटरसाइकिल लेकर था। ''इधर से अभी रास्ता बंद है कच्चा प्लास्टर है घूम के जाना पड़ेगा''! ''घूम के जाने का रास्ता और को बताना काका, हमें नहीं'' अपनी लड़खड़ाती जबान को संभालता किशन बदतमीजी पर उतरता जा रहा था!

''अरे काहे इतना बतकही कर रहे हो। परसों उद्घाटन है, मुखिया जी का आदेश है अभी रास्ता नहीं खोलना कच्चा पलस्तर है।''

किशन अपने काबू में नहीं था। उसका पारा बढ़ता जा रहा था, और सीमा पर तैनात सिपाही की तरह भगवान भी लाठी पटकते डटे थे..। एक उम्र के बाद आज खून में उबाल आया है, ऐसे कैसे किशनवा सारे किए कराए पर पानी फेर देगा हमारे रहते...। एक जांबाज सिपाही का कर्तव्य याद कर गुस्से से कांपते हुए भगवान ने किशन के मोटरसाइकिल पर हाथ धरा ''ए किशनवा ज्यादा नंगटई हमको दिखाओगे तो यहीं छठी का दूध याद दिला देंगे। जानते नहीं हम कौन हैं? तुम्हारे शर्म लिहाज बची है जरा सी कि वो भी घोल कर ठेके पर पी आए...?''

नशे में धुत्त आवारा किशन, जो अपने सरपंच बाप के पैसों का ताव मूंछों पर देता दिन भर नई हीरो होंडा लेकर पेट्रोल फूंकता रहता... तैश में आ गया, ''कौन हो तुम बे जो हमको बोलोगे...कहने को एक धुर जमीन मरने के लिए भी नहीं, नाम है इनका भगवान...दिन रात हमारे दरवाजे पर पेटकुनिया दे कर बीतता और मेरा रास्ता रोक रहे''... कहकर वहीं पड़ी ईंट लेकर सर पर दे मारी...

शीशे से कानों में वाक्य पिघल चोट कर ही रहे थे कि अचानक हमले से हड़बड़ा कर औंधे मुंह गिर पड़े..। खून की

धार सर से निकल आँखों तक पहुंच रही थी कि किशन ने बाइक स्टार्ट कर छोड़ दी और दो– चार बार और ईंट से वार करता रहा..। सन्नाटे में मोटरसाइकिल की आवाज गूंज रही थी और भगवान की चीख–पुकार के स्वर को सुनने वाला कोई नहीं था। सर्द रात में बेहोश भगवान को मृतप्राय समझ भगवान के भरोसे छोड़ किशन फरार हो गया।

पौ फटते ही गाँव में शोर मचा...गनीमत थी साँसें चल रहीं थी... भगवान को उठा के अस्पताल ले जाया गया...। हे ईश्वर कहीं कुछ हो गया तो ब्रह्म हत्या का दोष पूरे गाँव को लगेगा। कौन कर सकता है ? अरे आदत तो है ही बतकुट्टी करने की, जाने किससे भिड़ गए होंगे..?

सब अपनी दूरदर्शिता दिखा रहे थे और भगवान के होश में आने का भी इंतजार था। कुल चौदह टांके लगे थे जान बच गई किसी तरह...। किसने किया? क्या हुआ? पूछने पर चुप लगा के बैठ गए...!

सबने कहा पंचायत बुलाई जाए। समझ तो गए ही थे सब..., उस रात देर तक फटफटिया की आवाज कानों तक भी आई थी, पर भगवान ने साफ मना कर दिया..।

''अरे रात को सूझता नहीं है, उस पर भांग भी ज्यादा ले ली थी, गिर गए थे ठीक हो जाएगा''।

कह बस बात खतम कर दी। पर उस रात से घर से बाहर नहीं निकल पा रहा था किशन। नशा उतरने पर सारी बातें फिर से किसी फिल्म की तरह आंखों के आगे आने लगी, पंचायत तो बैठेगी ही, हो सकता है पुलिस में भी बात जाए। पहले ही गाँव वाले मौका तलाश ही रहे उसकी करतूतों की वजह से अंदर करवाने को...। सब अपने हित साधने में लगे हुए थे, मुखिया से होते बात विधायक तक भी पहुंची। सारे चुनावी दांवपेंच उल्टे न पड़ जाए। अच्छा खासा पैसा चुनावी फंड के लिए देते हैं किशन के पिताजी, तो चिंता जायज थी। कहीं बयान दे दिया भगवान ने तो किशनवा छह महीने के लिए भी अंदर गया तो इज्जत पर बट्टा तो लग ही जाएगा। ताकीद दी गई कि एक बार किशन जाएगा भगवान से बात करने। कुछ पैसे भी हाथ में रख देना, हो सकता है मान जाए''। अपराध तो उसने किया ही था, मन में अंतर्द्वंद्व की आंधी लेकर, हिम्मत जुटा कर किशन बाहर निकला। अस्पताल से छुट्टी मिल जाने पर चौधरी के दरवाजे पर खटिया डलवा दिया गया था। आराम करने को कहा गया था सो भगवान लेटे थे। किशन डरते डरते खड़ा हो गया सिरहाने में।

गले से आवाज मुश्किल से निकली ''काका''... कौन है ..अरे किशनवा तुम ? ''काका कैसी तबियत है? बहुत दर्द हो रहा होगा ना हमसे गलती हो गई, हम होश में नहीं थे हमको माफ कर दो'' फफक–फफक कर रो पड़ा...। हठात् दिमाग में बचपन की तस्वीर कौंधी, आखिर भगवान काका के कंधे पर गांव के सारे बच्चे उछलते कूदते बड़े हुए थे।

''अरे तुम होश में कहां थे, हम सोचे जब होश में आएगा तो कान पकड़ कनैठी लगाएंगे, सब हीरोपंती निकाल देते जैसे बचपन में लगाते थे, जब तुम पीछे से हमको ढेला मार कर भाग जाते थे...याद है ना...''!

पश्चाताप के आंसू पोंछता किशन पैसे भगवान की हाथ में रखने लगा ''काका ये तो रख लो''

''अरे किशनवा ई लेकर हम का करेंगे। पैसा हमारे किस काम का, पूरी जिनगी तो हम तुम लोगों के साथ ही गुजार दिए, सबको अपना ही समझे, सब पर अधिकार जताते रहे, जो हो गया सो हो गया... हमारे बाबूजी कहते थे–

तुलसी भरोसे राम के, निर्भय हो के सोए

अनहोनी होनी नहीं, होनी हो सो होए।

हम भी तो यही मान चलते रहे, तुम्हारी शिकायत कर पंचायत बुला कर सजा तो दिलवा देते पर शायद तुम्हारा कान अधिकार से तो ना फिर उमैठ पाते... जैसे तुम आज हमारे पास आए, क्या तब भी आते...?

जाओ घर जाओ किशन और हाँ हो सके तो नशा करना छोड़ दो... माई को देखा है अपनी, कैसे चिंता में सूखती जा रही... किशन चुपचाप वहाँ से उठ गया और अलमस्त बेपरवाह भगवान गला खखार कर कमजोर आवाज को संभालते गाने लगे, 'जोगिया मोर जगत सुखदायक दुख ककरो नहीं देल...!' ◆

पता : 6/702, ईस्टेन्ड अपा., निकट–न्यू अशोक नगर,
मेट्रो स्टेशन मयूर विहार, फेज–1, (एक्सटेंसन) दिल्ली–110096
मो. : 9654057927

बेटी

❑ अनुजीत इकबाल

वृंदावन के कृष्ण मंदिर में मंगला आरती का समय था। दीयों की रश्मियाँ प्रांगण में किसी पारिजात की सुगंध–सी बिखरी हुई थीं और कृष्ण की विश्वमोहिनी छवि आँखों में उतर रही थी। मैं उसी दिव्यता का रसास्वादन कर रही थी कि अचानक एक तीखी आवाज ने तंद्रा तोड़ दी, "चल हट बुढ़िया यहां से।"

क्रोधित पुजारी उसी विधवा को धिक्कार रहा था, जिसे मैं लगभग रोज मंदिर की दीवारों को सहलाते देखती थी। कई बार मैंने उसकी इस क्रिया का कारण भी पूछा था, पर हर बार उसकी चुप्पी मेरी जिज्ञासा को अधूरा छोड़ जाती। वह वृद्धा पीछे हट गई और बाहर की ओर चल दी। मैं भी अनायास उसके पीछे हो ली। उसके कमजोर हाथ उन दीवारों पर ऐसे फिर रहे थे मानो उनमें कोई जीवंत धड़कन हो।

मैंने पास जाकर नमस्कार किया और धीमे स्वर में बोली, "पुजारी का व्यवहार बहुत कठोर था।" उसने मुस्कुरा कर अपनी मैली–सी साड़ी से सिर को ढका और पूछा, "घाट चलोगी मेरे साथ?"

मेरा कोई इरादा नहीं था, पर न जाने क्यों उसके पीछे कदम बढ़ते गए। अंततः हम यमुना घाट पर आ बैठे। हवा में गीले चंदन और जल की गंध थी। मैंने हिचकिचाते हुए कहा, "आपके वृंदावन आने का कारण पति का स्वर्गवास...?"

"नहीं," उसने मेरी बात बीच में ही काट दी। मेरी उत्कंठा भांपकर वह बोली, "पति तो शादी के दो साल बाद ही बैकुंठ सिधार गए थे। मेरी एक बेटी थी, राधा।" मैंने पूछा, "कहाँ रहती है?" उसकी आँखें झील की गहराई जैसी हो गईं, "वह मर चुकी है।" मैं स्तब्ध उसे देखती रह गई। "वो मेरी प्राणाधार थी। ईंट भट्ठे पर काम करके मैंने उसे पाला। उस समय वह मुश्किल से पाँच साल की रही होगी।" "फिर?" मेरी आवाज काँप गई। "एक दिन भट्ठे पर खेलते हुए वह खोल के ढक्कन पर चढ़ गई। ढक्कन अचानक टूट गया और मेरे सामने ही... उसका अग्निदाह हो गया।" वृद्धा की आवाज में लावा–सा दर्द था। मेरी आँखें नम हो आईं।

फिर उसने धीमे स्वर में कहा, "जो ईंटें उस दिन भट्ठे में तप रही थीं, वे बाद में वृंदावन आईं, किसी मंदिर के जीर्णोद्धार के लिए। बस, मैं भी सीधी यहीं आ गई, अपनी राधा के पास।" उसकी आँखें घाट के पास खड़े मंदिरों पर टिकी थीं। उसने काँपते हाथों से यमुना की लहरों को छुआ और मंदिरों की तरफ देख कर बोली, "मेरी राधा इन दीवारों में बसी है। दुनिया वृंदावन आती है कृष्ण से संरक्षण पाने, लेकिन मेरी बेटी की प्रतिष्ठा तो कृष्ण से भी ऊँची है। उसने तो कृष्ण को ही संरक्षण दिया है, अपने तपे हुए शरीर की ईंटों से।"

उस क्षण लगा, वृंदावन की सारी घंटियाँ मौन हो गई हैं और उन मंदिरों की दीवारों में सचमुच किसी बच्ची की खिलखिलाहट अब भी गूँज रही है। ◆

पता : 4, राम रहीम एस्टेट, नीलमथा, लखनऊ–226002

मो. : 9919906100

प्रेम का अनुनाद

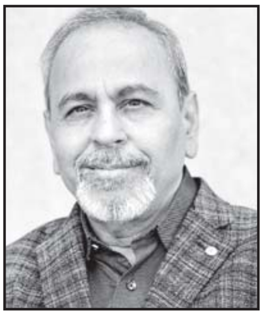

धर्मपाल महेंद्र जैन

किरणों के रंग–सा सुनहरा प्रेम
गहराती मौन रात में
हल्का नीला हो जाता है।

बादलों पर परी–सी सवार तुम
एक खामोश स्वप्न बन कर
धीरे–धीरे उतर आती हो मेरे समीप
और बन जाती हो खनकता चुंबन।
कमरे की नीली रोशनी
रोमांस के शब्द नहीं खोजती।
स्वच्छ निर्मल रात में
खिड़की से झाँकता चाँद
मेरे बिस्तर पर बिखर जाता है।
तुम्हारी असाधारण बातों के
अब सही अर्थ निकले हैं।

मेरी पलकें बंद होने लगी हैं।
नींद बाँहों में भर ले उसके पहले
मैं इस स्वप्न से बाहर निकल
एक बार तुम्हें देखना चाहता हूँ।

प्रेम का अनुनाद
तुम्हारे बिना असंभव है।

परछाइयाँ

हीरक वर्षों में
किसी स्त्री की
धुंधली परछाई झाँकती है तब
जीवन का दार्शनिक अनुच्छेद
चटख रंगों से भर जाता है।
तब बर्फ के ठंडे होठ
ठूँठ पड़े पेड़ पर
प्रेम का घोसला बुनने लगते हैं।

बीतती उम्र के साथ
दवा की गोलियाँ
लटकती आत्मा को
धकाती हैं देह के भीतर।
प्रेम गुरुत्वाकर्षण—सा
उसे स्थापित कर देता है
अपनी कक्षा के केंद्र में।

जीवन के गलत पैमानों को
प्रेम सही से करता है चिह्नित
हर दुःख को एक अंक और
खुशी को दो अंक देकर
प्रेम जलाये रखता है
उम्मीद की लौ।

अब प्रेम में मैं अकेला नहीं हूँ।
प्रेम की परछाइयाँ
अब उजाले में नहीं काँपती
वे घनी हो जाती हैं
परस्पर—से विलय में
वे अंधेरे को भी बदल देती हैं
प्रेम में जीने के लिए।

अबूझ अदृश्य मन

भीतर न कोई द्वार है न खिड़की
वहाँ लाल रंग का तरल अंधेरा है।
विद्युत परिपथ—सा फैला संजाल
देखती हैं बंद आँखें भीतर
जादुई तरीकों से बदलते हैं रंग
सफेद से नीले तक
ताकि दिख सके सुना—सुना मन।
मन, जो भीतर ही कहीं है।

आड़ी—टेढ़ी परावर्तित किरणें
आलोकित कर जाती हैं
कुछ चमकदार कण।
बाहर से भीतर देखने में
हो जाता है प्रेम,
प्रेम एकांगी मन से।
तब लगता है मन यहीं कहीं है।

गहरे भीतर प्रवेश वर्जित है।
किसी माइक्रोस्कोप में
नहीं दिखतीं दंश से बिंधी
मन की क्षत—विक्षत परतें।
नहीं दिखतीं आनंद में उमगी
हिलोरें लेतीं खुशी की तरंगें।

अबूझ अदृश्य मन के
नहीं मिलते कोई स्थिति—बिंदु
देह के आरूप में।
भीतर फिर—फिर जाने से
कुछ नहीं मिलता।
हो कर भी
कहीं नहीं दिखता मन।

◆

पता : 22, फैरल ऐवेन्यू, टोरंटो, एम 2 आर 1 सी 8, कनाडा
मो. : (001) 4162252415

एक नया आकाश

पूनम पांडेय

उसकी आँख में,
इक सपना पलने लगा,
सपने की महक,
सारे घर में,
फैलने लगी,
उम्मीद से भरी,
उसकी मां ने,
उसके सपनों की,
बोली को पढ़कर,
उसे
इजाजत दे दी,
अपनी मर्जी के,
रास्ते पर चलने की,

अनोखा है,
आज उसके,
अधरों का,
लाल रंग,

उसके,
दांत, चबा रहे हैं,
नमक लगी रोटी
और
रोटी का हर निवाला,
आशीर्वाद की तरह,
रक्त में मिल
उसकी ताकत
बनता जा रहा है।

◆

पता : पुष्कर रोड, कोटरा, अजमेर, राजस्थान–305004
मो. : 9828792720

''विहंग की उड़ान''

आत्रेय मिश्र (पी.सी.एस.)
सहायक निदेशक

अकेला ही विहंग उड़ चला,
किंकर्तव्यविमूढ़ लक्ष्य की तलाश में,
हृदय की उमड़ती स्नेहित लहरें भी,
आध्यात्मिक ज्ञान की आश में।

मन उसका होने लगा द्रवित,
जीवन के उतार चढ़ाव में,
हल्के पंखों से उड़ते अनवरत,
अलौकिक ज्ञान की तलाश में।

अधूरा सा रहा गतिमान,
था थककर धरा पर उतरने,
नयनों के द्वारा लगे अश्रु गिरने,
लक्ष्य था अवसान पर फिसलने।

लगा उसका हृदय सहसा धिक्कारने,
थकना क्षणिक है पथिक प्यारे,
रे ! विहंग, तू पंखों में उड़ान दे,
रोके नहीं पर, न रूके तेरे इरादे।

घाव गहरे थे, नभ से लड़ते लड़ते,
अनुरन्जित धारा प्रस्फुटित हुई मन में,
उर की ध्वनि का अनुवाद हुआ नभ में,
क्या कभी आत्म साक्षात्कार किया तूने?

रे मतवाले ! माया में तू रहा मस्त सदा,
माया ठगनी तेरे हंसती सदा मन में,
बाँधा स्वयं ही प्रकाश पुंज को तुमने,
आकर्षण व विकर्षण से न रहा परे।

तेरे अन्दर अविरल गंगा की धारा तथा,
तत्व की खोज ही है सच्ची यात्रा प्यारे,
तत् त्वम् असि है भीतर ही समाया,
शान्ति, सुख, प्रकाश भीतर ही पाया।

खोल रे विहंग, हृदय का द्वार अपना,
पायेगा खुद को सच्चिदानन्द के रंग में,
उज्जवलित होंगी सदा तेरी प्रेमपूर्ण आँखें,
ईश्वर कर मुरली गूँजेगी अन्तः करण में।

◆

पता : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र., लखनऊ–226001
मो. : 8756658813

मन की मन से : जीवन उमंग की कविताएं

❑ सुरेन्द्र वाजपेयी

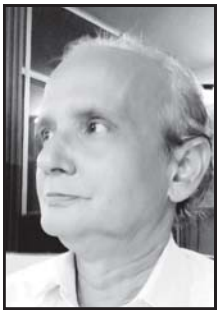

आकाशवाणी, दूरदर्शन की कार्यक्रम प्रस्तोता, पुस्तकालय विज्ञान एवं पत्रकारिता की परास्नातक और पत्रकारिता से जुड़ी बहुचर्चित कवयित्री मंजरी तिवारी का प्रथम काव्य संग्रह "मन की मन से" में कुल 115 कविताएं हैं जो यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन नई दिल्ली से प्रकाशित हुआ है। संग्रह की कविताओं में मन के भावों को विस्तार देते हुए विभिन्न विषयों का वर्णन किया गया है। कबीर साहब ने कहा है "माला फेरत जुग, भया, फिरा न मन का फेर/कर का मन का डारी दे, मन का मनका फेर"। कवयित्री ने अपनी कविताओं में कुछ ऐसा ही किया है। दुनियावी परिवेश में रहते हुए अपने विचारों को गढ़ने में उसने सफलता प्राप्त की है। आज समाज, परिवार और देश में बिखराव है, नफरत है, अनाचार है, असमानता है, अशिक्षा है आदि आदि लेकिन शुरू से प्रेम, सत्य, अहिंसा, सद्भाव, सहयोग जैसे नैतिक गुणों को स्थापित करने पर सभी महापुरुषों, विचारकों, कवियों, लेखकों ने बल दिया। कवयित्री भी कहती हैं –

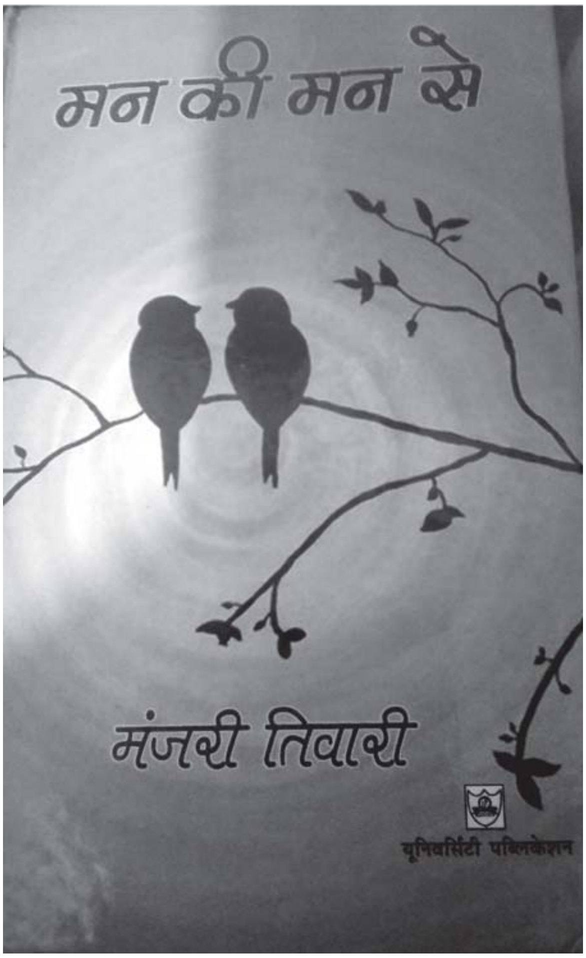

समझा तुमने सारे जमाने को बेहतर,
मुझको भी समझ पाए तो कुछ और बात होती।

आज आदमी आदमियत से दूर होता जा रहा है, जो घातक है। परस्पर भावनाओं को समझना भी जरूरी है, लेकिन कवयित्री सुधर कर जीवन बने नेक इंसान की पक्षधर हैं। कवयित्री खत्म होते भावनात्मक लगाव को जगाना चाहती हैं, तभी तो वह कहती हैं–

याद आता है जो मुद्दतों बाद भी
कैसे कह दूं मेरा उससे रिश्ता नहीं।

मानवीय संवेदनाओं का ह्रास हो रहा है। आदमी अपने स्वार्थ में अंधा हो गया है। "परहित सरिस धर्म नही भाई" उक्ति अब कहावत बन गई है। कवयित्री तमाम तरह के विवादों को सुलझाना चाहती हैं। उन्हीं के शब्दों में–

उलझ जाओ गर उलझनों में
तो उलझो नहीं,
लड़ जाओ उलझनो से।

कवयित्री संघर्षशील हैं। वह "एकला चलो" का प्रचार–प्रसार करती हैं, इसके बावजूद परस्पर सामंजस्य बना कर रखना ही श्रेयस्कर समझती हैं। तभी तो वह कहती हैं–

बैठे हो क्यों दुनिया से मुंह मोड़ कर।
आएगा पीछे जमाना देख तू खुद को जोड़ कर।
है पथरीली राहों पर चलना,
तपकर दुख की आंच में।
कुंदन– सा निखरना है,
याद कर दुनिया आसान थी कब?
संघर्ष तब भी था
मां के पेट में जब

वाकई सच की राहों पर चलना कठिन है। इस भव–जाल में अनेक कंटक हैं। यह कवयित्री का साहस है जो जीवन– संघर्ष को सहर्ष झेलने को तत्पर है। कवयित्री ने मायावी दुनिया के संकटों से इतर पर्यावरण की ओर भी ध्यान आकृष्ट किया है। वह काशीवासी हैं। "बिलखती गंगा" की महत्ता की ओर संकेत करते हुए वह गंगा की दुर्दशा से चिंतित हैं। प्रकृति से खिलवाड़ करने वालों को वह जागरूक करना चाहती हैं–

बिलखती है गंगा देख विनाश की लीला,
बच्चों ने ही माँ की पवित्रता को छीना
खत्म हो गए जो जल, वायु तो कैसे जी पाएगा?
मानवता की हत्या का पाप कौन उठाएगा?

इस प्रकार हम देखते हैं कि संग्रह की कविताओं में मन का आवेग तीव्र है। कवयित्री इंतजार की घड़ियां गिनती है तो खामोशी को भी तोड़ती हैं। वह अपने माता–पिता की पावन स्मृतियों को भी ताजा करती हैं तो आधुनिक प्रेम दिवस को भी याद करती हैं। वह उदासी खत्म करना चाहती हैं, तो रिश्तों को प्रगाढ़ भी बनाना चाहती हैं। वह अपनी "मंजरी कविता में कहती हैं–

सबके चेहरे पर हो मुस्कान,
बस इतनी ख्वाहिश मेरी।

सर्वे भवंतु सुखिन : की भावना से ओतप्रोत कवयित्री की इन भावना और संवेदना प्रधान कविताओं का स्वागत है जो पठनीय एवं विचारणीय है। यद्यपि यह कवयित्री का पहला संग्रह है, इसमें काव्यगत त्रुटियों का होना स्वाभाविक है। संग्रह की कविताएं गीत, गजल, तुकांत, अतुकांत जैसी भी हैं, कवयित्री ने इसका ख्याल न रखते हुए अपनी अभिव्यक्ति को प्राथमिकता दी है। कविताओं की भाषा सहज, सुबोध एवं मर्मस्पर्शी है। आशा है, आगामी संग्रह में काव्यगत स्वरूप के मानक को ध्यान रखते हुए बेहतर रचनाएं प्रकाश में आएँगी। संग्रह का मुद्रण साफ सुथरा है। कवयित्री के यश में वृद्धि होगी और सुहृदयी पाठकों के बीच संग्रह का यथेष्ट स्वागत होगा। मेरी अनंत शुभकामनाएं हैं। ◆

कवयित्री : मंजरी तिवारी
कृति : मन की मन से (काव्य संग्रह)
मूल्य : 700 / –
प्रकाशक : यूनिवर्सिटी पब्लिकेशन, नई दिल्ली
पृष्ठ : 122

पता : हिन्दी प्रचारक संस्थान, पिशाचमोचन, मलदहिया, वाराणसी (उ.प्र.)–221010
मो. : 9889985696

भूख सिर्फ पेट की बात नहीं है....

—डॉ. अमल सिंह 'भिक्षुक'

भूख
सिर्फ पेट की बात नहीं है।
यह आँखों में उगती है,
छाती में सूखती है,
हथेलियों में फटती है
और कभी—कभी तो
ख़्वाबों तक को खा जाती है।
भूख
उस औरत की आँखों में है
जो दो रोटियों के लिए
अपनी इज्ज़त को
सौंप देती है किसी अजनबी को।
भूख
उस किसान की फटी बनियान में है
जो हर साल बारिश से
अपनी उम्मीदें सींचता है
और हर बार
बाजार उसे धो देता है।
भूख
स्कूल के बाहर
गुब्बारे बेचते उस बच्चे में है
जो हिसाब नहीं जानता,
लेकिन जानता है कि
चार समोसे एक वक्त के पेट को भर सकते हैं।
भूख
वो लंबी कतार है
जहाँ आधार कार्ड से पहले
भूख का नंबर आता है।
और अगर नहीं आता,
तो भूख
खुद को घोंट देती है—
शब्दहीन, आवाजहीन।

◆

पता : 133/30, मु.—भारती गंज,
पोस्ट—सासाराम—821115, जिला—रोहतास (बिहार)
मो. : 9135704800

भारत सरकार के रजिस्ट्रार आफ न्यूज पेपर्स की रजिस्ट्री संख्या 33122/78
भारतीय डाक विभाग की डाक पंजीयन संख्या–एल.डब्लू./एन.पी. 432/2006

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उत्तर प्रदेश

प्रमुख प्रकाशन

उत्तर प्रदेश मासिक : समकालीन साहित्य, संस्कृति, कला और विचार की मासिक पत्रिका समूल्य उपलब्ध एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।

नया दौर (उर्दू) : सांस्कृतिक एवं साहित्यिक विषय की एक उर्दू मासिक पत्रिका, एक अंक रु. 15/– मात्र, वार्षिक मूल्य रु. 180/– मात्र।

वार्षिकी (हिन्दी/अंग्रेजी) : उत्तर प्रदेश के विभिन्न क्षेत्रों के विस्तृत आंकड़ों एवं सूचनाओं का वार्षिक विवरण मूल्य रु. 325/– मात्र।

महत्वपूर्ण प्रकाशनों के लिए सम्पर्क करें

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र.
दीनदयाल उपाध्याय सूचना परिसर, पार्क रोड, लखनऊ
उत्तर प्रदेश के समस्त जिला सूचना कार्यालय

सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. स्वत्वाधिकारी के लिए विशाल सिंह, निदेशक, सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग, उ.प्र. लखनऊ द्वारा प्रकाशित तथा प्रकाश पैकेजर्स, लखनऊ में मुद्रित